ISSN 2349-834X

मिथिला-भारती

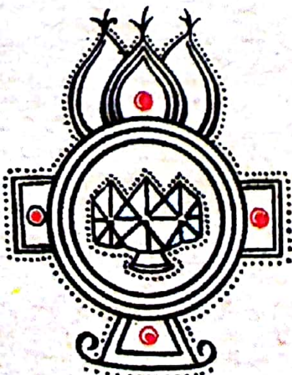
Mithilā-Bhārati

त्रैमासिक शोध-पत्रिका

भाग 4 (N.S.) 2017 अंक 1-4

(प्रो. उपेन्द्र ठाकुर स्मृति ग्रंथ)





संपादक

डॉ० शिवकुमार मिश्र

भैरव लाल दास

मैथिली साहित्य संस्थान, पटना

www.maithilisahityasansthan.org

मैथिली साहित्य संस्थानक प्रमुख उद्देश्य :-

(क) मैथिली भाषा एवम् साहित्यक सर्वाङ्गीण विकास।

(ख) मिथिला-भारती नामक त्रैमासिक शोध साहित्यिक पत्रिकाक प्रकाशन एवम् विक्रय।

(ग) मिथिला, मैथिल एवम् मैथिलीक सम्बन्ध मे अनुसंधान एवम् शोधकार्य।

(घ) लोककला, हस्तकला शिल्पकला एवम् लोकभाषाक विकास।



ISSN 2349-834X

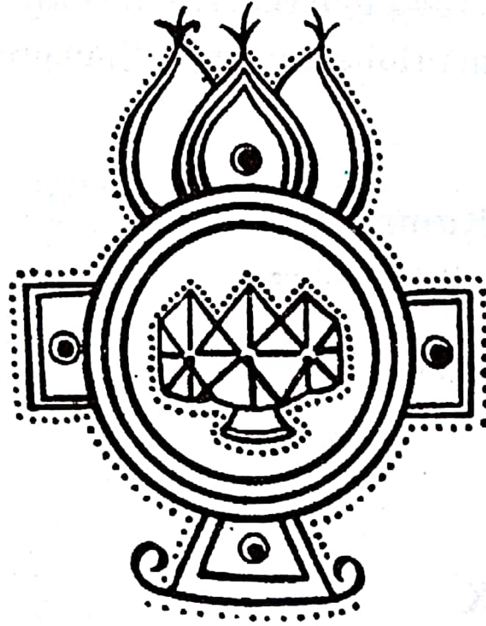
मिथिला-भारती

Mithilā Bhāratī

त्रैमासिक शोध-पत्रिका

भाग 4 (नवांक) 2017 ई. अंक 1-4

(प्रो. उपेन्द्र ठाकुर स्मृति ग्रंथ)



संपादक

डॉ॰ शिवकुमार मिश्र

भैरव लाल दास

प्रकाशक

मैथिली साहित्य संस्थान, पटना

www.maithilisahityasansthan.org

चन्दाझाक मिथिला - इतिहास ओ पुरातत्व चिन्तन

शंकरदेवझा*

उनैसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे 1832 ई. मे जहिया मिथिला मे चन्द्रनाथ झा प्रसिद्ध चन्दाझाक जन्म भेल छलनि ओहि समयमे भारत ब्रिटिश पराधीनताक बेड़ीमे जकड़ल छल। अपन छल-बलसँ चतुर अंग्रेजजाति भारतक समस्त देशी शक्तिकें नतमस्तक होयबाकलेल विवश कऽ देने छल। भारतवासीकें अंग्रेजी रंगमे रंगबाक ओ अंग्रेजी राजैंक भारतक हेतु वरदान सावित करबाक दिशामे अंग्रेज प्रशासकगण जी-जानसँ भिड़ल छल। भारतक पारम्परिक शिक्षा प्रणाली, प्रशासनिक ओ न्यायिक व्यवस्थाकँ बदलि : यूरोपीय प्रणाली लागू कयल जा रहल छल। एक तरहें भारतवासीकँ अपन अतीत सँ काटि देबाक दूरगामी षड्यन्त्र रचल जा रहल छल। अपन एहि अभियानकँ सफलीभूत करबाक हेतु अंग्रेज बंगालक नव-चिन्तनवादी समाज सुधारक राजा राममोहनराय (1774-1883) सन बुद्धिजीवीक उपयोग कऽ रहल छल जे भारतीय शरीर होइतहुँआपादमस्तक युरोपीय रङमे रँगि गेल रहथि। भारतकँ वर्त्तमान दुर्दशासँ उबारबाक लेल ओ अतीतसँ पूर्णतः सम्बन्ध-विच्छेद करब परमावश्यक मानैत रहथि। हुनका भारतीय परम्परा ओ संस्कृतिमे नीक तत्त्व बड़ कम आ अधलाहे तत्त्व बेसी देखबामे अबैत छलनि।[1]

वस्तुतः राजा राममोहनराय सन व्यक्ति उपनिवेशवादी रणनीतिक उपज छलाह। अपन अतीतसँ पूर्णतया विलग होयबाक विचार अवश्ये अतिवादिता छल आ एहि आधार पर नवजागरणक कल्पना करब दिवास्वप्न देखब सन छल, तँ राममोहनक अवधारणाकँ सर्वस्वीकार्य होयब असम्भव छल। तथापि मानसिक ओ नैतिक जड़ताक कारणें उत्पन्न सांस्कृतिक अधोपतनक एहि दुर्दिन कालमे भारतीय समाजमे एकटा नवीन चेतनाक उदय होअऽ लागल। 1835 मे स्वीकृत मैकाले शिक्षापद्धतिसँ पूर्वहि बंगालमे अंग्रेजी शिक्षाक प्रसार आरम्भ भऽ चुकल

---

* कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-846001; मो. नं. - 09430639249;
Email : dr.shankerdeojha@gmail.com

छल जकर केन्द्र छल कलकत्ताक हिन्दू कालेज। पछाति 1835 क ई शिक्षानीति आ बादमे कलकत्ता, बम्बइ तथा मद्रासमे तीन विश्वविद्यालयक स्थापनाक कारणे एकटा नवीन शिक्षित वर्गक अभ्युदय भेल। उदार दृष्टिकोण, तर्कशीलता ओ विवेकसँ सम्पन्न ई वर्ग विदेशी पराधीनताक पीड़ा आ भारतीय समाजमे व्याप्त कुरीतिक अनुभव करऽ लागल। उनैसम शताब्दीक एही मध्यकालमे देशक विभिन्न भागमे स्वतःस्फूर्त्त ढंगसँ भारतीय नवजागरणक उन्मेषक महापुरुष लोकनिक अवतरण होअऽ लागल छल। बंगालमे देवेन्द्रनाथ टैगोर (1818-1905), केशवचन्द्रसेन (1834-84), ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (1820-91), बंकिमचन्द्र चटर्जी (1838-84), रामकृष्ण परमहंस (1834-86), महाराष्ट्रमे महादेव गोविन्द राणाडे (1842-01), एन.जी. चन्द्रावरकर (1855-1923), डा. आत्माराम पाण्डुरंग(1823-98), गुजरातमे मेहताजी दुर्गाराम मंचाराम (1809-76), स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-83) आदि सन कतोक महापुरुष लोकनिक आविर्भाव भेल जे सामाजिक, धार्मिक क्षेत्रमे आयल दुर्गुण सभकेँ देखार कयलनि, देशभाषाक प्रति जनमानसमे चेतना जगौलनि, आत्मविस्मृत-सुषुप्त जनसमुदायमे अपन स्वर्णिम अतीतक प्रति गौरवबोध विकसित कऽ नवीन स्फूर्त्ति भरलनि।

आधुनिक युगक एहि महापुरुष लोकनिक अखिल भारतीय अवतरणक एही कड़ीमे मिथिलामे तत्कालीन तिरहुत जिलाक पिण्डारूच गाममे चन्दाझाक जन्म भेलनि। मुदा शेष भारतसँ मिथिलाक समकालीन परिस्थिति सर्वथा भिन्न छल। मिथिलामे ने तँ बंगाल जकाँ पश्चिम प्रेरित सुधार आन्दोलनक सिहकी बहल छल आ ने अंग्रेजी शिक्षाक प्रभावेँ पश्चिमी जिज्ञासु प्रवृत्ति ओ पूर्वी विश्वाससँ समन्वित वर्गक अभ्युदय भेल छल। आत्मविश्लेषणक प्रवृत्ति सँ विरत मिथिलाक समाज कट्टर सनातनी छल। मिथिलाक शिक्षा प्रणाली वैह प्राचीन पद्धतिक छल, नवीनताक नामपर हिन्दीकेँ प्रश्रय देल जा रहल छल। अंग्रेजी शिक्षा भविष्यक गर्भमे छल आ मातृभाषा मैथिली प्रत्येक क्षेत्रसँ बहिष्कृत कयल जा रहल छल। एहि सर्वथा प्रतिकूल परिस्थिति वला क्षेत्रमे जँ ओही समकालमे चन्दाझा सन नवचेतनावादी व्यक्तिक स्वतः अभ्युदय भेल तँ एकरा ऐतिहासिक आश्चर्य कहल जयबाकचाही। जँ ई कहल जाय जे ई भारतीय नवजागरण आन्दोलन सर्वव्यापी छल, देशक पूब पश्चिम ओ दच्छिनसँ चलल सुधारवादक लहरि मिथिलो धरि पहुँचल तँ ईहो कहबामे तारतम्य नहि जे एहि लहरिसँ मिथिलामे प्रभावित भेनिहार केवल एकमात्र व्यक्ति भेलाह चन्दाझा।

संस्कृत विद्वान भोलानाथझाक पारम्परिक शिक्षाप्राप्त पुत्र चन्दाझामे जँ अपन समकालीन परिवेशक प्रति साकांक्षता छलनि। हुनकामे अपन युगक तापक दाहकताक अनुभव करबाक सामर्थ्य छलनि, सम्पूर्ण भारतमे बहि रहल सुधारवादी बसातक सिहकीक अनुभव करबाक जँ हुनकामे अवगति छलनि, विश्वव्यापी चेतनासँ निरपेक्ष बनल अपन स्वभाषा ओ स्वसंस्कृतिसँ विरत विराट मैथिल जनसमुदायक कूपमंडूकता अंग्रेजी साम्राज्यक क्रमशः कसैत सिकंजा ओ भारतीय स्वाभिमानपर कयल जा रहल चोटक पीड़ाक अनुभूतिक विशिष्ट बोधजँ हुनकामे प्रचुर मात्रमे छलनि तँ तत्कालीन मिथिलाक परिप्रेक्ष्यमे एकरा दैवी वरदाने कहल जयबाक चाही।

चन्दाझाक नवजागरणवादी जीवनक विकास बड़ जटिल पृष्ठभूमिमे भेलनि। राजनीतिक दृष्टिसँ ओ सामंतवादी सत्ताक युग छल। मिथिलाक छोट-पैघ सब राजा-सामंत लोकनि मोनसँ किंवा विमोनेसँ सर्वशक्तिमान अंग्रेजी सत्ताक प्रति भक्ति प्रदर्शित करैत छलाह। समाजक तथाकथित सम्भ्रान्त-प्रबुद्ध वर्ग एही सामंतवादक छत्रछायामे रहि आत्ममुग्ध छलाह। मिथिलाक अपढ़ कृषक-श्रमिक समुदाय अपन दुखधनियाँमे व्यस्त छल। अपन वर्त्तमानकालिक दुःस्थितिसँ उबरबाक कोनोटा सुगबुगाहटि मिथिलामे देखबा मे नहि आबि रहल छल। एहनामे मिथिलाक सुषुप्त समाजकेँ जागृत करबाक हेतु जे कोनो कार्य-योजना चन्दाझाक मस्तिष्कमे अबैत छलनि तकरा मूर्त्त रूप देब असम्भव लगैत छल, किए तँ अपन एहि अभियानमे ओ एसकरे छलाह। बंगाल ओ महाराष्ट्र सन प्रान्तमे अंग्रेजी शिक्षाक प्रसारक संग-संग विचार अभिव्यक्ति ओ जनसम्पर्कक माध्यमक रूपमे पत्रकारिता विकसित भऽ रहल छल। मुदा मिथिलामे तखन धरि एकर कोनो उचावर्चो नहि छल। तथापि एहि प्रतिकूल परिस्थितियोमे चन्दाझा हारि नहि मानलनि। समाजक संग संवाद स्थापित करबाक हेतु ओ परम्परागत लोकमाध्यमक चुनाओ कयलनि। विशुद्ध लोकभाषामे समकालीन देशदशा-यथा अंग्रेजी कुशासन, अन्यायपूर्ण न्याय व्यवस्था, महगी, अकाली, धर्महानि आदिक चित्रण करैत पद्यक रचना करब प्रारम्भ कयलनि। मिथिला ओ भारतक चिन्तासँ परिपूर्ण चन्दाझाक ई कविता सभ कण्ठे-कण्ठ पसरऽ लागल। हुनक ई आरम्भिक रचना सब जनताकेँ उद्वेलित करैत ओकर विचारकेँ नवीन दिशा देवऽ लगलैक। एहि तरहेँ मिथिलामे सेहो क्षेत्रीय ओ राष्ट्रीय चेतनाक विकासक संग नवजागरणक सूत्रपात भऽ सकल। रचनात्मक देशभक्ति एहि अखिल भारतीय अभ्युदयक टटका परिणामक रूपमे 1857 क महान क्रान्ति सन ऐतिहासिक घटना घटित भेल। 26 वर्षक नवयुवक

चन्दाझा अपना आँखिए एहि क्रान्तिकेँ असफल होइत देखलनि। एही संगे भारतकेँ नीक जकाँ ब्रिटिश साम्राज्यवादक बेड़ीमे जकड़ि देल गेलैक आ ई समस्त घटनाचक्र चन्दाझाकेँ वैचारिक परिपक्वता प्रदान कयलकनि।

1875 क क्रान्तिकेँ लाठीक हाथेँ दमित कऽ देल गेलैक, मुदा एकर परिणाम बड़ प्रभावकारी सिद्ध भेल। भारतवासीमे विदेशी दासतासँ मुक्त होयबाक लेल तद्योग्य बनयबाक ब्याजेँ राजनीतिक ओ सांस्कृतिकचेतना क्रमशः बेसी प्रज्ज्वलित होअऽ लागल। एहनो वैचारिक परिवर्त्तन कालमे मिथिलामे एकमात्र चन्देझा नेतृत्त्वकर्त्ता ओ पथप्रदर्शक छलाह। जेना कालपुरुष हिनकहि कान्हपर सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, शैक्षणिक आदि प्रत्येक क्षेत्रमे नवीनताक सूत्रपात ओ वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न करबाक दायित्व सौँपि देलकनि। चन्दाझा सहर्ष एहि दायित्वकेँ स्वीकार कयलनि। ओ अनुभव कयलनि जे अपन स्वर्णिम अतीत, गौरवपूर्ण पांडित्य ओ साहित्यिक परम्परा आदिक प्रति सम्मानक भाव जगा कऽ आत्मविस्मृत मैथिल समाजमे राष्ट्रियताक भावना विकसित कयल जा सकैछ। चन्दाझाक हृदयमे यैह व्यग्रता हुनका मिथिलाक विस्मृत इतिहासक संकलन ओ लेखन दिस उत्प्रेरित कयलकनि। ई गवेषणात्मक अभियान हुनक मिथिला नवजागरण योजनाक एकटा महत्त्वपूर्ण भाग छलनि।

चन्दाझास्वभावहिसँ अनुसन्धानी प्रवृत्तिक रहथि। हुनकासँ पूर्व मिथिला-इतिहासक संकलन किंवा लेखनक कोनो तेहन कार्य नहिभेल छल। एहि क्षेत्रक इतिहास मुख्यतः जनश्रुतिक रूपमे जनकण्ठमे सुरक्षित छल। पुरातात्विक-ऐतिहासिक महत्त्वक स्थल सभ यत्र-तत्र उपेक्षित पड़ल छल। प्राचीन पाण्डुलिपि-तालपत्र इत्यादि पंडित लोकनिक घरमे अटेङल पड़ल छलनि। चन्दाझासँ बहुत पहिने चौदहम-पन्द्रहम शताब्दीमे भेल महाकवि विद्यापति रचित **पुरुष परीक्षा** इतिहास विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ छल। मुदा संस्कृतक होयबाक कारणेँ ई सभकलेल बोधगम्य नहि रहि गेल छल। चन्दाझासँ किछुए पूर्व 1809-10 ई. मे एकटा अंग्रेज प्रशासक फ्रांसिस बुकनन 'एन एकाउन्ट आफ द डिस्ट्रिक्ट ऑफ पूर्णिया' नामसँ अंग्रेजीमे एकटा रिपोर्ट तैयार कयने छल जाहिमे संक्षेपमे मिथिलाक इतिहासकेँ सेहो समेटल गेल अछि! मुदा ता धरि ई रिपोर्ट अप्रकाशित सरकारी सामग्री छल। चन्दाझाक समकालीन मुजफ्फरपुर निवासी अयोध्याप्रसाद 'रहबर' तथा दरभंगा निवासी बिहारीलाल 'फितरत' उर्दूमे क्रमशः **रेयाज-ए-तिरहुत** ओ **आइना-ए-तिरहुत** नामक ग्रन्थक लेखन कयलनि जाहिमे संक्षेपमे मिथिलाक इतिहासकेँ वर्णित कयल गेल अछि, मुदा ईहो दूनू पोथी

सर्वजन बोधगम्य नहि छल। एतावता मिथिलाक इतिहास लेखनक क्षेत्रमे एकटा शून्यताक स्थिति छल।

एहना स्थितिमे चन्दाझा एसकरे मिथिला-इतिहासक अनुसन्धानक बीड़ा उठौलनि। ई इतिहास लेखन कोनो एकान्त कक्षमे साधना कऽ कऽ नहि अपितु यायावर बनलहि उत्तर सम्भव छल। चन्दाझाक नीयतिये किछु तेहन रहलनि जे ओ हुनका यायावर बनौने रहलनि। जन्म भेलनि पिण्डारूचमे, शिक्षा प्राप्त कयलनि अपन मातृक बड़गाम (मधेपुरा जिला) में। जीवनयापनक हेतु आरम्भमे गन्धवारि डेउढ़ीक वासुदेवसिंहक आश्रयमे रहलाह। तत्पश्चात किछु वर्ष नरहन स्टेटमे रहलाह। 1880 मे जखन दरभंगा राज कोरटसँ मुक्त भेल तँ महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह हिनका अपना राजधानी दरभंगामे मँगबा लेलथिन। जीवनक उत्तरार्द्धमे बहुते कारणे हिनका अपन जन्मभूमि पिण्डारूच छोड़ि अपन सासुर अन्हरा-ठाढ़ीमे जा कऽ बसऽ पड़लनि। एहि प्रकारेँ अपन जीवनभरि एहि यायावरीक क्रममे चन्दाझा जतऽ कतहु रहलाह मिथिला-इतिहासक सर्वेक्षण एवं ओहिसँ सम्बद्ध ऐतिह्य तथा किंवदन्तीक संकलन कऽ कऽ ओकरा अपन बहीमे टिपैत चल गेल करथि। भ्रमणक क्रममे जतऽ कतहु हुनका सूचना भेटनि जे अमुक व्यक्तिक घरमे पुरान पाण्डुलिपि-तालपत्र इत्यादि छनि तँ ओ ओकरा अपनेसँ देखि ओकर सूची बना लेथि ओकर आवश्यक अंश अपन बहीमे उतारिलेथि।[2] एहिसँ अतिरिक्तो चन्दाझा मिथिला-इतिहासक संकलन हेतु योजनापूर्वक मिथिलाक विभिन्न भागक भ्रमण कयने फिरथि। हिनक समकालीन बिहारीलाल फितरत अपन पोथी **आइना-ए-तिरहुतमे** हिनका सम्बन्ध मे लिखने छथि जे ई अत्यन्त मनस्वी ओ भ्रमणशील छलाह।[3] जी.ए. ग्रियर्सन हिनका भारतक एहि पूर्वी भागक सर्वश्रेष्ठ विद्वान ओ मनस्वी कहने छथिन।[4] **मिथिलामोदमे** हिनका मिथिला-मैथिलीक प्रति सर्वस्व अर्पणकर्त्ता कहि कऽ श्रद्धांजलि देल गेलनि अछि।[5]

चन्दाझा जीवन पर्यन्त जतेक रासे इतिहास लेखनक सामग्री सभ संकलित कयलनि वैह बही-टिपौत सभ कवीश्वरक पोथा नामसँ जानल जाइत अछि। चन्दाझाक ई पोथा सभ कतेक संख्यामे छलनि से आब कहब असम्भव। मुदा जतेक जे सूचना भेटैत अछि तदनुसार चन्दाझाक 1907 मे मृत्युक पश्चात हुनक बहुतो पोथा सभ म.म. परमेश्वरझाक जिम्मामे दरभंगा राज पुस्तकायलमे जमा कयल गेल छल।[6] चन्दाझाक किछु पोथा हुनक समसामयिक गन्धवारि डेउढ़ीक बासुदेवसिंहक नाति विन्ध्यनाथझा ओ गणनाथझा आदिक लग छलनि जे पछाति डा. सर गंगानाथझा ओ हुनक पुत्र अमरनाथझाक संग्रहमे पहुँचल।[7] हुनक किछु

पोथा कविशेखर बदरीनाथझा लग छलनि जे पछाति प्रो. रमानाथझा कँ हस्तगत भेलनि।[8] एही पोथा सभसँ डा. विश्वेश्वरमिश्र **चन्द्ररचनावलीक** संकलन-सम्पादन कयलनि अछि संगहि चन्दाझाक विविध विषयक मैथिली गद्य तथा हुनक मध्यदेशीय भाषामे रचित रचनादिक संकलन सेहो कयने छथि जे एखनहुँ प्रकाशनक प्रतीक्षामे अछि।[9] चन्दाझाक किछु पोथा राजपंडित बलदेवमिश्र लग छलनि जाहिमेसँ ओ हुनक रचित पद सभक संकलन कऽ **चन्द्रपद्यावलीक** सम्पादन कयलनि।[10] राजपंडित लगक ई पोथा सभ आब हुनक एक गोट सम्बन्धी महिनाम (दरभंगा) निवासी डा. ललितेश्वरझा लग छनि।[11] चन्दाझाक किछु पोथा ओ पाण्डुलिपि हुनक वंशज पिंडारूच निवासी गोनरझा[12] तथा आनन्दझा (हरिपुर) एवं हरिश्चन्द्रझा कविराज (रामभद्रपुर) लग सेहो छलनि।[13] किछु पोथा हुनक एक गोट और वंशधर महिषी निवासी प्रोफेसर मायाकान्तझा लग छनि जे विगत 13 फरवरी 2008 कँ पिण्डारूचमे आयोजित कवीश्वर चन्दाझा पुण्यशती समारोहक अवसरपर उपस्थित भेल रहथि आ ताही क्रममे हुनक पोथाकँ दर्शनार्थ अपना संगे ओ अनने रहथि। किछु पोथा ओ डायरी चन्दाझापर पहिले-पहिल शोध-ग्रन्थ प्रस्तुतकर्त्ता कलिगाँव निवासी ओ लहेरियासराय आवासी डा. ललितेश्वरझाक संग्रहमे राखल छनि। 15 दिसम्बर 2007 कँ गप्प-शप्प क्रममे डा. झा एहि बातक सूचना देने छलथि। चन्दाझाक एक गोट पोथा डा. रूद्रकान्तमिश्र (प्रयाग) कँ दृष्टिगत भेल छलनि।[14]

एतावता चन्दाझा मिथिला-इतिहास लेखन विषयक जे कच्चा माल सभ जीवन पर्यन्त एकत्रित कयलनि, अपन खिस्टा-बही ओ टिपौत सभमे जतेक सूचना ओ संकलित कयलनि, इतिहास विषयक कतोक ग्रन्थक योजना बना कऽ आधा-छिधा लिखलनि से सभटा हुनक मृत्यूपरान्त बिरहो-बाँट भऽ गेल। तथापि हुनक परवर्त्ती बहुतो विद्वान लोकनि हुनका द्वारा सञ्चित सामग्रीक अपना-अपना अनुसारेँ उपयोग कऽ प्रकाशमे अनलनि तँ हुनक अपन जीवनकालमे सेहो **पुरुषपरीक्षाक** मैथिली अनुवादवला पोथीमे विभिन्न ठाम टिप्पणीक क्रममे, **मिथिलाभाषा रामायणक** परिशिष्टमे ओ साहेबरामदासक भजनावलीक भूमिकाक रूपमे प्रकाशित भऽ सकलनि। एहि आधारपर हिनक इतिहास लेखनक योजनाकँ निम्नलिखित विभाजनक आधारपर विश्लेषित कयल जा सकैछ-

1. राजनीतिक इतिहास
2. पाण्डित्य परम्पराक इतिहास
3. सन्त परम्पराक इतिहास

4. मैथिली साहित्य परम्पराक इतिहास
5. ग्राम-मूलग्रामक इतिहास
6. गढ़-डीह-मन्दिर आदिक इतिहास
7. पोखरि-जलाशयक इतिहास

1. राजनीतिक इतिहास-चन्दाझाक राजनीतिक इतिहास लेखनसँ तात्पर्य भारत ओ मिथिलाक ओहि ज्ञात-अज्ञात नृप लोकनिक कीर्त्तिगाथा उजागर करब छल जाहिसँ मिथिला निवासी अपन स्वर्णिम अतीतक परिचय प्राप्त करबाक संग-संग ओहिसँ प्रेरणा ग्रहण कऽ सकथि। अपन एही उद्देश्यकँ ध्यानमे राखि ओ विद्यापति रचित संस्कृत ग्रन्थ **पुरुषपरीक्षाक** मैथिली अनुवाद कयलनि। **पुरुष परीक्षामे** भारत ओ मिथिलाक इतिहासक अनेक राजपुरुष लोकनि यथा चाणक्य, चन्द्रगुप्त, शकटार, राक्षस, विक्रमादित्य, भोज, लक्ष्मणसेन, नान्यदेव, मल्लदेव, नरसिंहदेव, अलाउद्दीन, मुहम्मद गोरी, बराहमिहिर, विशाखदत्त, श्रीहर्ष, वीरेश्वर आदिक कथा कहल गेल अछि। चन्दाझा द्वारा एहि ग्रन्थक भाषानुवाद करबाक पाछाँ विशेष इतिहास-दृष्टि छलनि। एही **पुरुष परीक्षाक** अनुवाद क्रममे विभिन्न इतिहास पुरुष लोकनिक कथाक प्रसंगमे चन्दाझा अपन शोधपरक टिप्पणी ओ अन्य प्रसंगक उल्लेख कऽ कऽ एकरा सम्पूर्णतः इतिहास-ग्रन्थ बना देलनि अछि। एही ग्रन्थक युद्धवीर कथाक प्रसंगमे चन्दाझा सूचना देने छथि जे ओ 'राजावली' नामक एकटा ग्रन्थक लेखन कऽ रहल छथि जाहिमे द्वितीय युधिष्ठिर राजासँ लऽ कऽ हुनका समय धरि भेल मैथिल राजा लोकनिक सम्बन्धमे विस्तारसँ कहल जायत।[15] चन्दाझाक एहि टिप्पणीसँ परिलक्षित होइछ जे महाभारतकालीन युधिष्ठिरसँ भिन्न मिथिलामे सेहो कोनो एहि नामक राजा भेल छलाह। मुदा जँ कि हुनक बनाओल ई 'राजावली' ग्रन्थ एखनो धरि दृष्टिपथपर नहि आबि सकल अछि तँ किछु कहल नहि जा सकैछ। यद्यपि एहि प्रसंग ईहो शंका कयल जाइछ जे डा. गंगानाथझाक एक गोट लेख 'मिथिला के महीपों की नामावली' सरस्वती नामक मासिक पत्रिकामे प्रकाशित भेल छलनि तकर आधार चन्दाझाक यैह 'राजावली' छलनि।[16] एहिना रमानाथझा लग संकलित चन्दाझाक एक गोट पोथामे 'मिथिलेतिहास' शीर्षकक अन्तर्गत मिथिलाक इतिहासक किछु अंश लिखल भेटैत अछि। चन्दाझा द्वारा प्रारम्भ कयल गेल एहि ग्रन्थक आरम्भमे मंगलाचरणक बाद निम्न श्लोक अछि-

सकलगुण निवासं तीरभुक्तिहासं
लिखित सुकृकर्मा मैथिलश्चन्द्रशर्म्मा।

एहिसँ आगाँ एहि ग्रन्थमे मिथिलाक जनक राजवंश ओ हुनका लोकनिक जनक पदवीक व्याख्या कयल गेल अछि।[17]

मिथिलामे विदेह राजवंशक अवसान ओ 1098 ई. मे कर्णाट राजवंशक स्थापनाक बीचक ई समय एखनहुँ अन्धकार युगक नामसँ अभिहित कयल जाइछ। मुदा चन्दाझा विभिन्न स्रोतसँ एहि अन्धकार युगक इतिहासक खोज कऽ कऽ ओकरा प्रकाशमे अनबाक प्रयास कयलनि। **पुरुषपरीक्षाक** 'जालविद्य' कथाक प्रसंगमे चन्दाझा हरिवंशसँ स्रोत ग्रहण करैत सूचना देने छथि जे कृष्णक जेठ भाय बलराम मिथिलामे साठि वर्ष धरि विदेह राजा लोकनिक सान्निध्यमे निवास कयने रहथि। मिथिलामे रहिकऽ दुर्योधन अपन मित्र विदेह राजा सँ गदायुद्ध सिखने रहथि एहि क्रममे मिथिलाक प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थल बलिराजगढ़ (मधुबनी) क इतिहासकेँ **स्कन्दपुराणक** सह्याद्रि खण्डक 35 म अध्यायमेसँ ताकि कऽ निकालैत छथि। तदनुसार सौनल्य मुनि ओ पद्मावतीदेवीसँ उत्पन्न चन्द्रवंशी क्षत्रिय लोकनिक शासन मिथिलामे छल। एहि वंशमे क्रमशः बीस गोट राजा-यदु, भास्कर, सुरथ, गर्ज्जन, दण्डधारी, खंगधर, श्रीवदन, नागराज, गुणराज, शिव, सोमनाथ, महाकाल, दुन्दुभि, विम्वराज, देवक, अनिरूद्ध, गोपति, मदन, सुनेत्र एवं बलिराज भेलाह। चन्दाझाक मतानुसार बलिराजगढ़क नामकरण एही बलिराजकनामपर भेल अछि। अपन एहि मतक पुष्टिमे हुनका द्वारा किछु औरो पुरातात्त्विक प्रमाण प्रस्तुत कयल गेल अछि। यथा-बलिराजगढ़क समीपहि स्थित मदनेश्वर महादेवक अधिष्ठाता ओही बलिराजक पितामह मदन रहथिन एवं हावीडीह (दरभंगा) मे प्राप्त एकटा लक्ष्मीनारायणक प्रस्तर मूर्त्तिमे उत्कीर्ण श्रीमन्मदन माधवः अभिलेखक मदन वैह चन्द्रवंशी मदन थिकाह।[18]

पुरुषपरीक्षाक 'भयविद्य' कथामे नन्द, चाणक्य ओ चन्द्रगुप्तवला ऐतिहासिक प्रसंग आयल अछि। एहि सम्बन्धमे टिप्पणीमे चन्दाझाक मत छनिजे नन्द राजक नाश हेतु चाणक्य जाहि स्थानपर अभिचार प्रयोग कयने रहथि ओ स्थान दरभंगा शहरसँ छओ मील उत्तर स्थित नदारी गाम अछि।[19] यद्यपि अपन एहि तर्कक सम्पुष्टिमे ओ कोनो प्रमाण नहि देने छथि अपितु हुनक एहि कथनक आधार चाणक्यकेँ मैथिल मानबाक प्रचलित किंवदन्ती अछि आ ई कहबाक उद्देश्य यैह जे नन्दवंशक पतन ओ मौर्य वंशक स्थापनामे मिथिलाक प्रत्यक्षतः योगदान रहल अछि।

मिथिलाक प्रसिद्ध दार्शनिक वृद्ध वाचस्पतिक परिचय लिखैत हुनक बनाओल 'भामती' टीकाक आधारपर एकटा नृग नामक अज्ञात मैथिल नृपक चर्च

करैत कहैत छथि जे ई राज गुप्त वैद्यवंशी छलाह।[20] मैथिल विद्वान बररूचिक प्रसंगमे चन्दाझा मिथिला इतिहासक एकटा अल्पज्ञात 'भर' नामक क्षत्रिय राजवंशक चर्च करैत ओकरा उज्जैनक विक्रमादित्य राजाक दायाद कहैत छथि।[21] यद्यपि परमेश्वरझाक मत एहिसँ भिन्न छनि। ओ विक्रमादित्यकेँ परामारवंशी कहैत छथि। जखन कि भर एहिसँ पृथक वंश अछि जकर उपस्थिति सोलहम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे खण्डवला राजवंशक स्थापनाक बाद धरि देखल जाइत अछि।[22] यद्यपि चन्दाझा द्वारा प्रदत्त उक्त सूचना सभ गम्भीर विश्लेषणक अपेक्षा रखैत अछि, मुदा अपना समयमे जाहि तरहेँ ओ मिथिलाक अन्धकार युगक इतिहासक भुतिआयल कड़ी सभकेँ ताकि कऽ सामने अनबाक प्रयास कयलनि से निश्चयत: अत्यन्त प्रशंसनीय अछि।

1098 ई. मे कर्णाट राजवंशक स्थापनाक संग मिथिलाक क्रमबद्ध इतिहासकेँ चन्दाझा सूत्र-शैलीमे विभिन्न ठाम लिखलनि। **पुरुषपरीक्षाक** युद्धवीर कथामे कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवक पराक्रमक कथा कहल गेल अछि। एहि कथाक ब्याजेँ चन्दाझा कर्णाट वंशक इतिहास प्रस्तुत करैत लिखने छथि जे नान्य राजा कर्णाट क्षत्रिय छलाह जे शाके 1019 (1098 ई.) मे मिथिलाक राज पौलनि। हिनक वंशज लोकनि 226 वर्ष अर्थात 1324 ई. धरि राज कयलनि। नान्यदेवक मिथिला राज्य प्राप्तिक सम्बन्धमे सापक फणपर लिखित श्लोक आ ताहि आधारपर राजा अलर्क द्वारा संचित धनक प्राप्ति वला किंवदन्तीक उल्लेख करैत कायस्थ मंत्री श्रीधरक उल्लेख सेहो भेल अछि।[23] उपर्युक्त किंवदन्तीक उल्लेख चन्दाझाक समकालीन बिहारीलाल 'फितरत' अपन **आइना-ए-तिरहुत**[24] मे तथा हुनक परवर्त्ती परमेश्वरझा सेहो अपन **मिथिला तत्त्व विमर्श**[25] मे कयने छथि। चन्दाझा सिमरौनगढ़मे प्रस्तर शिलापर नान्यदेव द्वारा उत्कीर्ण अभिलेखकेँ उद्धृत करैत मिथिला ओ तिरहुतक बीचक अन्तरकेँ स्पष्टताक संग रेखांकित करैत लिखने छथि जे नान्यदेव मिथिलाक राजा छलाह, मुदा हुनक निवासस्थान तिरहुतक नानपुरमे छलनि। मिथिलाक इतिहास लेखनमे ई तथ्य विचारणीय अछि जे मिथिला आ तिरहुत एक दोसराक पर्याय होइतो प्रशासनिक दृष्टिसँ दू अछि। मिथिला एहि समग्र भूभागक द्योतक अछि जकर सीमा स्वयं चन्दाझा निम्न पद्यमे निर्धारित कयने छथि -

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिसि पूर्व कौशिकी धारा।
पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा।।
कमला, त्रियुगा, अमृता, धेमुरा वागमती कृतसारा।

मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा।।[26]

एकर विपरीत तिरहुत मिथिलाक एकटा प्रशासनिक एकाइ रहल अछि। गुप्त शासनकालमे तीरभुक्ति नामक एकटा विषयक उल्लेख प्राप्त होइत अछि जकर मुख्यालय वर्त्तमान मुजफ्फरपुर जिला अछि। तुर्क-अफगानसँ लऽ कऽ मुगल शासनकाल धरि मिथिलाक अन्तर्गत तिरहुत नामक एकटासरकार छल। कम्पनी शासन कालमे तिरहुत जिला भऽ गेल। वर्त्तमानो समयमे तिरहुत कमिश्नरी अछि। मिथिला ओ तिरहुतक बीचक एहि अन्तरकेँ चन्दाझासँ पूर्व फ्रांसिस बुकनन अपन पूर्णिया रिपोर्ट-1809-10 मे स्पष्टताक संग रेखांकित कयने छथि।[27]

पुरुष परीक्षाक अलग कथामे विद्यापतिक पितामह ओ कर्णाट राजाक मंत्री वीरेश्वरठाकुरक बुद्धिमत्ताक वर्णन भेल अछि। एहि प्रसंगमे अपन टिप्पणी करैत चन्दाझा समग्र कर्णाट वंशावलीक विवरण देने छथि तदनुसार एहि वंशमे छओ गोट राजा भेलाह जाहिमे नान्यदेव-36 वर्ष, गंगदेव-14 वर्ष, नरसिंहदेव-52 वर्ष, रामसिंहदेव-92 वर्ष, शक्रसिंह-12 वर्ष एवं हरिसिंह-20 वर्ष राज कयलनि।[28] (एतऽ भ्रमवश हरसिंहदेवकेँ हरिसिंह कहि देल गेल अछि।)

कर्णाटवंशसँ सम्बद्ध अनेकशः इतिवृत्तिक उल्लेख करैत चन्दाझा लिखैत छथि जे नान्यदेवक पराक्रमी पुत्र मल्लदेवकेँ चिक्कोर राजसँ मैत्री छलनि। चिक्कोर नरेशक संग एकटा युद्धमे ई काशी नरेश जयचन्द्रकेँ पराजित कयने रहथि। चन्दाझाक अनुसार ई युद्ध शाके 1040 (1118 ई.) मे भेल छल।[29] एहिना नान्यदेवक पौत्र नरसिंहदेवक प्रसंग कहल गेल अछि जे कोनो काफिर राजाकेँ युद्धमे मारि देबाक पुरस्कारमे महमूद गजनवी हिनका तिरहुतक राजा बनौलकनि। पुनः बंगदेशकेँ विजय कऽ घुरैत काल गयासुद्दीन सिमरौनगढ़सँ हिनका अपना संगे लऽ गेल छलनि।[30] आब एतऽ चन्दाझाक ई उक्ति पैघ भ्रम उत्पन्न करैत अछि। नरसिंहदेवक शासनकाल 1148-1200 ई. धरि निर्धारित होइछ। 1098 ई. मे एहि राजवंशक स्थापने भेल छल, ताहिसँ एक सय वर्ष पूर्वे 998 ई. मे गजनीक सिंहामनपर महमूद गजनवी बैसल छल। एहनामे चन्दाझाक ई उक्ति सर्वथा असंगत छनि। जँ देखल जाय तँ गजनीक सूबेदार गोरवंशीय आक्रान्ता मुहम्मदगोरीक समसामयिक रहथि नरसिंहदेव। गोरीक पहिल आक्रमण 1175 ई. मे मुल्तानपर भेल छलैक। यैह गोरी अजमेरक पृथ्वीराजचौहान तथा कन्नौजक जयचन्दक संगे युद्ध कयने छल। बख्तियार खिलजी नामक एकरे एकटा सेनानायक बंगालक लक्ष्मणसेन (1170-1205) कँ पराजित कयने छल।[31] सम्भवतः चन्दाझाक उक्त कथनक आशय मुहम्मदगोरीसँ सम्बद्ध छनि। ध्यान रखबाक थिक जे बंगालक

लक्ष्मणसेनक पितामह विजयसेन (1097-1159) कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेव (1098-1134) कँ पराजित कयने रहथिन।[32] भऽ सकैछ जे लक्ष्मणसेन सन अपन पितामह वैरीक विरूद्ध नरसिंहदेव खिलजीक सहायता कयने होयथिन। यद्यपि चन्दाझाक उक्त कथ्यक गम्भीर ऐतिहासिक परीक्षण कयल जयबाक चाही। एहिना गयासुद्दीन द्वारा नरसिंहदेवकँ अपना संग लऽ जयबाक वृत्तान्त सेहो युक्तिसंगत नहि अछि। किएकतँ मुहम्मदगोरीक समयमे भारतमे एहि नामक कोनो मुस्लिम सेनानायकक उल्लेख नहि भेटैत अछि। गियासुद्दीन नामक सुल्तान बहुत बादमे तुगलक वंशमे भेल छल जे कर्णाट वंशक अन्तिम राजा हरसिंहदेव (1304-1324) पर आक्रमण कयने छल।[33] कर्णाट वंशक एहि अन्तिम राजाक प्रसंग चन्दाझा लिखैत छथि जे हिनक जन्म शाके 1216 (1294 ई.) मे भेल छलनि। ई अपन आवास दरभंगासँ पूब राघोपुरमे बनौलनि। शाके 1248 (1326 ई.) मे ई मैथिल ब्राह्मणक पंजी प्रबन्ध कयलनि। पछाति यवनसँ त्रस्त भऽ उत्तरक पहाड़-जंगलमे चलगेलाह। भाला परगनाक मौजे उमागाममे सेहो हिनक एकटा निवास स्थान छलनि जतऽ आइयो ई ग्रामदेवताक रूप मे पूजित भऽ रहल छथि। यद्यपि चन्दाझाक स्वयं अपन गणनानुसार 1324 धरि मात्र मिथिलामे कर्णाट शासन रहल, तखन पुनः 1326 मे हरसिंह देव पंजी प्रबन्ध कोना कयलनि? ई प्रश्न उठैत अछि। मुदा एकर उत्तर यैह जे इतिहास लेखनमे सटीक काल निर्धारण सभ दिनसँ एकटा कठिन समस्या रहल अछि। तखन जँ चन्दाझा सन आद्य इतिहासकारसँ ई सभ त्रुटि भेलनि अछि तँ ई कोनो पैघ बात नहि। हुनक कार्यक महत्त्व यैह जे ओ संक्षेपहिमे कर्णाट राजवंशक सम्बन्धमे बहुत रास सूचना सभ एकत्रित कऽ देलनि अछि।[34]

पुरुष परीक्षाक परिशिष्टमे चन्दाझा विशुद्ध रूप सँ ओइनिवार राजवंशक इतिहास प्रस्तुत कयने छथि। अपन समकालीन कोनो जीवीझा पंजीकारक सहयोगसँ एहि वंशक बीजी पुरुष ओएनठाकुरसँ लऽ कऽ अन्तिम राजा लक्ष्मीनाथ कंसनारायण धरिक मिथिलाक राज्य अयबाक वृतान्त प्रस्तुत करबाक हेतु चन्दाझा विद्यापतिक कतोक ग्रन्थक उद्धरण पंजी-प्रबन्ध पुरातत्त्व ओ ऐतिह्य-किंवदन्ती आदि स्रोतक उपयोग कयने छथि। तदनुसार खैआल-जगतपुर मुलक ओएनठाकुरक छठम पीढ़ीमे भेल राजपंडित कामेश्वरठाकुरके दिल्ली सुल्तान फीरोजशाह (1351-88) मिथिलाक राज्य देलकनि, मुदा सिद्धपुरुष रहबाक कारणे ओ एकरा स्वीकार नहि कयलनि। तखन हुनक जेठ पुत्र भोगीश्वरके अपन मित्र कहि कऽ सुल्तान मिथिला राज्यदेलकनि। मुदा हुनक छोट भाय भवसिंह राज्य बँटबा

लेलथिन। 1360 ई. मे राजा भोगीश्वरक देहान्त भऽ गेलनि। हुनक पुत्र गणेश्वर राजाभेलाह।[35] एहि ठाम चन्दाझा ऐतिहासिक साक्ष्यक रहितो ओइनिवार वंशक सम्बन्धमे पसारल गेल एकटा भ्रान्तिक शिकार भऽ गेलाह अछि। भवसिंहक पुत्र कुमर त्रिपुरसिंहक सम्बन्धमे पंजीमे लिखल अछि–'राज्य दुर्ज्जन त्रिपुर सिंह खाडे।' एहि पंक्तिक गलत व्याख्या करैत एकटा ऐतिहासिक भ्रम पसारल गेल जे त्रिपुरसिंहक पुत्र राय अर्जुन ओ कामेश्वरठाकुरक एकटा भाय हर्षनठाकुरक पौत्र रत्नाकरठाकुर ई दुनू गोटा मीलि कऽगणेश्वरक हत्या कऽ कऽ राजा भऽ गेलाह। तखन गणेश्वरक पुत्र वीरसिंह ओ कीर्त्तिसिंह दिल्लीक सुल्तान लग नालिस कयलनि आ ओकर सहायतासँ पुनः कीर्त्तिसिंह राजा भेलाह। चन्दाझा **कीर्त्तिलतासँ** कीर्त्तिसिंहक पुनः राजा बनबाक प्रसंगवला पद उद्धृत करैत तदुपरि विद्यापतिक **लिखनावलीक** अन्तक ओहि श्लोककेँ उद्धृत कयने छथि जकर अर्थ अछि जे शिवसिंहक मित्र पुरादित्य राजा, संग्राममे अर्जुन भूपकेँ पराजित कयलनि जे बन्धुघाती छल, पुनः सप्तरी परगना अर्जित कयलनि।[36]

आब एतऽ आश्चर्यकईगप्प थिक जे एक दिस चन्दाझा अर्जुनरायकेँ गणेश्वरक हत्यारा कहैत छथि आ **कीर्तिलतासँ** उद्धरणोदैत छथि। जखन कि **कीर्त्तिलताक** दोसर पल्लवमे स्पष्ट रूपसँ कहल गेल अछि जे जखन लक्ष्मणसेन नरेशक 252 संवत् अर्थात् 1361ई. आरम्भ भेल तँ चैतमासक प्रथम पक्षक पंचमी तिथिकेँ बुद्धि, पराक्रम आ बलमे हारल राज्यलोलुप दुष्ट असलान गणेश्वरक विश्वासपात्र बनि हुनक निकट आयल आ अवसर पाबि कऽ एक दिन हुनक हत्या कऽ देलक–

लख्खणसेन नरेश लिहिअ जे पख्ख पंच बे।
तम्महु मासहि पढम पख्ख पंचमी कहिअजे।
रज्ज लुद्ध असलान बुद्धि बिक्कम बलेँ हारल।
पास बइसि विसवासि राअ गअनेसल मारल।

कीर्त्तिलताक चतुर्थ पल्लवमे वर्णनभेल अछिजेजखन मलिक असलान कीर्त्तिसिंहक हाथेँ पराजित भऽ पीठ देखा देलक तखन कीर्त्तिसिंह ओकरा पर कटाक्ष करैत कहलथिन जे जाहि हाथेँ तोँ हमर बापक वध कयलह से हाथ आब कतऽ चल गेलह –

तं खणे पेख्खिअ राअ सो अरू सुख्खेअ करेओ।
जँ करें मारिअ बप्प महु से कर कमन हरेओ।।

कीर्त्तिलताक उपर्युक्त दूनू उद्धरणसँ स्पष्ट होइछ जे गणेश्वरक हत्या असलान कयने छल अर्जुन राय नहि।[37]

लिखनावलीक अन्तमे जे श्लोक अछि ताहिमे पुरादित्य द्वारा जाहि अर्जुनक वध करबाक वृत्तान्त अछि से अर्जुन त्रिपुरसिंहक पुत्रे रहथि से कतहु स्पष्ट नहि अछि तखन चन्दाझा एहन गलत निष्कर्ष कोना निकालि लेलनि? पुनः राज्य दुर्ज्जन खाडे' क अर्थ राज्यक हेतु जे दुर्जन तकरा विरूद्ध खड्ग सदृश रहथि त्रिपुरसिंह सेहो तँ व्याख्या कयल जा सकैत अछि। वस्तुतः ओइनिवार राजवंशकेँ कलंकित करबाक जे राजनीतिक कुचक्र छल ताहिसँ चन्दाझा प्रभावित भऽ गेलाह आ बिना कोनो प्रमाणक एहि तरहक मिथ्या निष्पत्ति प्रतिपादित कऽ देलनि। चन्दाझाकेँ तावत धरि विद्यापति रचित **कीर्त्तिपताका** सेहो देखबाक अवसर नहि प्राप्त भेल छलनि। जँ से देखने रहितथि तँ देखितथि जे एहि ग्रन्थक आरम्भिक भागमे ओ कोना राय अर्जुनक प्रशस्ति गायन कयने छथि। एहि सँ अतिरिक्त हुनका अपन किछु गीतो समर्पित कयने छथि।[38] प्रश्न उठैछ जे की विद्यापति सन आदर्श पुरुषकेँ कोनो बन्धुघाती व्यक्तिक प्रशस्ति लिखबाक नैतिक साहस होइतनि आ पुनः एहन व्यक्तिकेँ की कीर्त्तिसिंह अपन आश्रयमे रखितथि जे हुनक पिताक हत्याराक अभ्यर्थना कयने हो।

एहिसँ आगाँ ओइनिवार राजवंशक इतिहास प्रस्तुत करैत कहल गेल अछि जे वीरसिंह ओ कीर्त्तिसिंह अपुत्र मुइलाह। तखन भवसिंहक पुत्र देवसिंह राजा भेलाह। ओ अपन राजधानी ओइनीसँ हटा कऽ देवकुलीमे बसौलनि। देवसिंहक जीवितहिँ मात्र पन्द्रह वर्षक अवस्थामे हुनक पराक्रमी पुत्र शिवसिंह राजा भेलाह। ओ अपना नामपर अनेक शिवसिंहपुर नामक गाम ओ गजरथपुर नामक नगर बसौलनि। हुनका अनेक बेर यवन राजा सभसँ युद्ध भेलनि। देवसिंहक मृत्युक बाद शिवसिंह मात्र तीन वर्ष नओ महीना धरि राज कऽ सकलाह। पश्चात् यवन सेनासँ पराभूत भऽ कऽ शिवसिंह विलुप्त भऽ गेलाह। हुनक पत्नी महारानी लखिमा सप्तरीक पुरादित्य राजाक आश्रयमे चल गेलीह। शिवसिंहक मंत्री चन्द्रकरक पुत्र अमृतकर पटना जाय बादशाहसँ अनुमति प्राप्त कयलक तखन शिवसिंहक छोट भाय पद्मसिंह राजा भेलाह। एक वर्षक बाद पद्मसिंहक मृत्यु भेला उत्तर हुनक पत्नी विश्वासदेवी बारह वर्ष धरि राज कयलनि। ओमहर शिवसिंहक बारह वर्ष धरि कोनो वार्त्ता नहि पाबि रानी लखिमा सती भऽ गेलीह। तत्पश्चात् धीरसिंह प्रसिद्ध हृदयनारायण राजा भेलाह। हुनक बाद भैरवसिंह हरिनारायण राजा भेलाह। ई अत्यन्त प्रतापी रहथि। हिनक मैत्री सम्बन्ध लंकाक तत्कालीन राजाक संग

छलनि। भैरवसिंहक बाद हुनक पुत्र रामभद्रसिंह रूपनारायण राजा भेलाह। तत्पश्चात् लक्ष्मीनाथ कंसनारायण राजा भेलाह जे अपन राजधानी भरौड़ा परगनाक कंसीमे लऽ गेलाह। हिनका संगहि एहि वंशक अन्त भऽ गेल।[39]

चन्दाझा ओइनिवार वंशक ई वंशावली विशुद्ध रूपसँ पंजीक आधारपर प्रस्तुत कयलनि, अन्य स्रोतसँ एकर मिलान नहि कऽ सकबाक कारणे हुनकासँ पुनः एकटा त्रुटि भऽ गेलनि। विश्वासदेवीकेँ अपुत्र मुइलाक बाद पुनः मिथिला राज्य हुनक दायाद लोकनिक हाथमे चल गेलनि ताहिमे विश्वासदेवीक उत्तराधिकारी देवसिंहक वैमात्रेय हरसिंहक पुत्र ओ शिवसिंहक पितियौत रत्नसिंह दर्पनारायण प्रसिद्ध नरसिंह राजा भेलाह। चन्दाझा द्वारा देल गेल वंशावलीमे शासक लोकनिक सूचीमे नरसिंह किंवा रत्नसिंहक नाम नहि अछि। मुदा एही राजा नरसिंहक आज्ञासँ विद्यापति 'विभागसार' नामक ग्रन्थक रचना कयने रहथि। ग्रन्थक प्रशस्ति श्लोकमे एकर उल्लेख अछि -

राज्ञो भवेशाद्धरिसिंह आसीत् तत्सूनुना दर्पनरायणेन।
राज्ञा नियुक्तोऽत्र विभागसारं विचार्य विद्यापतिरातनोति।।[40]

सम्भवतः चन्दाझाकेँ **विभागसार** दृष्टिपथपर नहि आयल छलनि। चन्दाझाकेँ विद्यापति रचित **दानवाक्यावली** सेहो देखबाक अवसर नहि भेटल छलनि। से जँ देखने रहितथि तँ ओ जानि सकितथि जे नरसिंहक विदुषी पत्नी धीरमतीक आज्ञासँ रचित एहि ग्रन्थमे विद्यापति कोन रूपमे एहि राजाक प्रशस्ति गायन कयने छथि। चन्दाझाकेँ एहू बातक कोनो सूचना नहि छलनि जे धीरमती कवयित्री सेहो छलीह। एमहर हुनक कतोक उत्कृष्ट पद सभक आविष्कार भेल अछि जाहिमे ओ अपन पतिक प्रशंसा करैत लिखने छथि -

नृप नरसिंह रसनागर रे जनि पाओल कन्ते।[41]

चन्दाझाकेँ ईहो नहि बूझल भऽ सकल छलनि जे एही नरसिंह द्वारा कन्दाहा (सहरसा) मे सूर्य मन्दिरक स्थापना कयल गेल छल।[42]

यद्यपि ओइनिवार राजवंशक इतिहास-लेखनमे चन्दाझासँ अनेक त्रुटि भऽ गेलनि अछि, तथापि एहिसँ हुनक अनुसन्धान कार्यक महत्त्व कनेको कम नहि होइत अछि किएकतँ हुनका द्वारा एहि तरहक कयल ई प्रथम कार्य अछि। चन्दाझा जतबे स्रोतकेँ ताकि ओकर उपयोग कयलनि तकरा कम कऽ कऽ नहि आँकल जा सकैछ।

ओइनिवार वंशक पतनक बाद मुगल बादशाह अकबर (1542-1605) क समयमे मिथिलाक चौधराइ खण्डवला वंशक महेशठाकुरकेँ भेटलनि। खण्डवला

राजवंशक संक्षिप्त विवरण चन्दाझा 1891-92 मे प्रकाशित अपन **मिथिलाभाषा रामायणक** परिशिष्टमे अंकित कयलनि। महेशठाकुरक मिथिला राज्य प्राप्तिक वर्णन चन्दाझा निम्न पद्यमे कयने छथि -

वसु-नग-वेद-वसुन्धरा, शक मे अकबर साह।
ठक्कुर सुबुध महेश को, कीन्हो मिथिला नाह।।
नृप तब सँ ता वंश मे, पालक परमोदार।
पटु पण्डित खण्डित कुमति, गुणमण्डित संसार।।[43]

उपर्युक्त पद्यक अर्थ भेल जे वसुन्धरा-1, वेद-4 नग-7 आ वसु-8 अर्थात 1478 (1556ई.) मे अकबर महेशठाकुरकेँ मिथिला राज्य प्रदान कयने छलथिन। आब एतऽ देखल जा सकैछ जे ओही वर्ष अर्थात 1556 ईस्वीक 15 फरवरी कँ अकबर राज्यारोहण भेल छलैक। ओहि समयमे ओकर अवस्था 14-15 वर्षक रहल होयतैक आ राज्यारोहणक समय मे पंजाबक किछु भागक नाममात्रक शासक छल।[44] एहनामे महेशठाकुरक विद्वत्तासँ प्रसन्न भऽ कऽ अकबर द्वारा हुनका मिथिला राज्य देबाक किंबदन्ती सहजहि नहि अरघैत अछि। जँ कि चन्दाझा एही राजवंशक आश्रित रहथि तँ एहि बिन्दुपर विशेष कोनो क्षोदक-क्षेम नहि कऽ ओहि किंवदन्तीकँ ऐतिहासिक तथ्य मानि लेलनि। तखन एतेक बात सत्य जे अबुल-फजल द्वारा देल गेल विवरणक अनुसार अकबरक दरबारमे दरभंगाक एकटा महेशठाकुर रहथि जे संस्कृतमे अकबरक शासनकालक इतिहास लिखने रहथिं। एहि ग्रन्थक हस्तलिखित प्रति इंडिया ऑफिस लन्दनक पुस्तकालय मे राखल कहल जाइछ।[45] एहिसँ इतर चन्दाझा **रामायणक** परिशिष्टमे खण्डवला राजवंशक राजा लोकनिक नाम क्रमशः गनौने छथि। एतऽ एकटा तथ्य ध्यातव्य जे **रामायणक** प्रकाशनक समयमे महेशठाकुरसँ लऽ कऽ अपन समय धरिक सत्रहम राजा लक्ष्मीश्वरसिंहक नाम अंकित कयलनि। मुदा पछाति जे एहि **रामायणक** अन्य संस्करण सभ भेल ताहिमे सम्पादक लोकनि एहि सूचीकँ अद्यतन करैत एहिमे रमेश्वरसिंह ओ कामेश्वसिंहक नाम सेहो अपना दिससँ जोड़ि एहि परिशिष्टकँ सन्देहास्पद बना देलथिन। खण्डवला राजवंश सँ सम्बद्ध इतिहासक लेखन चन्दाझाक कोन पोथामे अछि से एखन धरि उद्घाटित नहि भऽ सकल अछि, मुदा परमेश्वर झा अपन **मिथिला तत्त्व विमर्शमे** खण्डवला वंशसँ सम्बद्ध चन्दाझाक किछु टिप्पणीक उल्लेख कयने छथि ताहिसँ ई जानल जा सकैछ जे अपन कोनो पोथामे चन्दाझा खण्डवला वंशक इतिहास लिखने छल होयताह।[46] निष्कर्षतः कहल जा सकैछ जे अपना समयमे चन्दाझा यत्र-तत्रसँ

सामग्री एकत्रित कऽ कऽ विदेह कालसँ लऽ कऽ खण्डवला कालधरिक मिथिलाक राजनीतिक इतिहासक एकटा ठाठ तैयार कयलनि जे निस्सन्देह एकटा ऐतिहासिक कार्य छल। एहिसँ भिन्न हिन्दी भाषामे चन्दाझा पश्चिमी मिथिलाक एकटा प्रसिद्ध बेतिया राजवंशक इतिहास फराकसँ लिखलनि जकरो किछु पृष्ठ देखवामे अबैत अछि। खगेशशर्माक काशी शिवस्तुति मे ई नरहन राजवंशक परिचय प्रस्तुत कयने छथि।

2. पाण्डित्य परम्पराक इतिहास – ब्रह्मविद्याक केन्द्रक रूपमे प्राचीनेकालसँ मिथिलाक ख्याति रहलैक अछि। चन्दाझा मिथिलाक एहि सारस्वत परम्पराक इतिहासकँ 'मैथिल पंडित चरितावली' नामसँ लिखबाक योजना बनौने रहथि। प्राय: एही उद्देश्यसँ प्राचीन पंडित लोकनिक जे-जतेक परिचयभेटैत गेलनि तकरा अपन पोथामे टिपैत चल गेलाह, किछु अंश पुरुष परीक्षा ओ मिथिला भाषा रामायणक माध्यमे प्रकाशितो भेलनि।

'ब्राह्मण सर्वस्वकार' ग्रन्थक रचयिता हलायुधक परिचय दैत चन्दाझा हुनका सोदरपुर मूलक बीजी पुरुष सिद्ध कयने छथि, मुदा एतऽ ध्यान रखबाक थिक जे हलायुध अपन ग्रन्थमे अपन गोत्र वत्स कहैत छथिन जखन कि सोदरपुर मूलक गोत्र शाण्डिल्य होइत अछि। निश्चित रूपसँ भ्रममे पड़लाक बाद चन्दाझाक ई अनुसंधान एहि बातंक द्योतक अछि जे मिथिलामे हलायुध नामक दू गोट विद्वान भेल छलाह। भामतीकार वृद्ध वाचस्पतिक परिचय लिखैत चन्दाझा हुनक पाठशाला अपन मातृक बड़गाम (मधेपुरा जिला) क निकट अगद्वारी होयब निश्चित कयने छथि – 'अगद्वारी एक बहुत उच्च डीह मौजे बड़गामसँ उत्तर ऐशान कोन बसनहीसँ नैर्ऋत कोनमे अछि। पूरा कोस नहि होएत। सएह किंवदन्ती अछि जे वृद्ध वाचस्पतिक पाठशालाथिक।' तहिना वररूचिक परिचय दैत हुनक काल उज्जैनक विक्रमादित्यक समय कहैत छथि।[47]

हरिनाथाचार्यक परिचय दैत चन्दाझा हिनका मंगरौनी निवासी ओ कर्णाट नरेश हरसिंहदेवक आश्रित कहलथिन अछि जे मैथिल ब्राह्मणक पंजी-प्रबन्ध कयलनि।[48]

पक्षधरमिश्रक परिचय दू ठाम लिखल भेटैत अछि। **पुरुषपरीक्षाक** इन्द्रजालविद्य कथाक प्रसंग एकटा टिप्पणीमे पक्षधरक परिचय दैत चन्दा झा लिखैत छथि जे-ई सोदरपुर-भौआल मूलक न्यायचिन्तामणिक टीकाकार, राजा हरिनारायण प्रसिद्ध भैरवदेवक सभापंडित छलाह जे शाके 1350 (1428ई.) मे विद्यमान रहथि। बंगदेशक शिरोमणि भट्टाचार्य हिनके शिष्य छलथिन।[49]

पक्षधरक विस्तृत परिचय चन्दाझाक एक गोट दोसर पोथामे भेटैत अछि। एहिमे पक्षधरक प्रतिलिपि कयल एक गोट ग्रन्थक तालपत्रक अन्वेषण कऽ कऽ ओकर उद्धरण दैत चन्दाझा लिखैत छथि-पक्षधर मिश्रक मुख्य नाम जयदेव। पंजीकार मुखश्रुति जयदेवापर नामक पक्षधर। हिनक पिताक नाम गुणेमिश्र। पितृव्यक नाम महामहोपाध्याय हरिमिश्र। यैह पक्षधरमिश्रक यावत् शास्त्रक गुरू। ई वृत्तान्त परिचय स्वयं लिखलहि छथि पक्षधरमिश्र। भटपुरामे चौपाड़ि-पाठशाला साक्षिणी भूमि अछि। एक पुस्तक **विष्णुपुराण** तालीपत्रमे अछि योगिबाड़ श्रीकेशवझाक घरमे अछि, से पक्षधरमिश्रहिक लिखलथिक। पुस्तकक अन्तपत्रमे लिखल एक श्लोक अछि -

वाणौवेदयुतैस्तु शम्भुनयनै स्संख्यांगते हायने
श्रीमद्गौड़महीं भुजो गुरू दिने मार्गेच पक्षे सिते।
षष्ठ्यान्ताममरावती मधिवसन् या भूमि देवालया
श्रीमत्पक्षधरस्सपुस्तकमिदं शुद्धं व्यलेखीद्द्रुतम।।[50]

मिथिलाक सारस्वत परम्परामे हरिताम्र (हरिअम्मय) वंशक अवदानक परिचय प्रस्तुत करैत चन्दाझा जेना गागरमे सागर भरि देने छथि। एहि वंशक सम्बन्धमे हुनक अपन मन्तव्य छनिजे बलिराजगढ़क चन्द्रवंशी राजा लोकनिक राजगुरू एही हरिताम्र वंशक मिश्र लोकनि छलथिन। एहि मूलक विभिन्न मूलग्राम यथा बलिराजपुर, मंगरौना, शिवा आ रखबारी ग्राम एही बलिराजगढ़क कोस-डेढ़कोसक अभ्यन्तरमे अछि, जतऽ एहि मूलक ब्राह्मण लोकनिक निवास छनि। एहि वंशक केशवपतिमिश्र, वनमालीमिश्र ओ पीताम्बरमिश्र आदि वृहस्पतिक समान पंडित रहथि। पीताम्बरमिश्रक सन्देहभेदिका **दुर्गाटीका** ओ **किरातचन्द्रिका** आदि ग्रन्थ छनि। किरातचन्द्रिकामे एकटा श्लोक अछि-यांचन्द्रिका मिहकरोति किरातक व्येपीताम्बरस्य हरिताम्रकुलप्रसूतः।

हरिताम्र वंशक रघुदेवमिश्र दिल्लीक यवन सम्राटसँ सरस्वती उपाधि अर्जित कयलनि। ई खण्डवलाकुल शेखरीभूत महेशठाकुरक पुत्र अच्युतठाकुरक पुत्री कुकुदिनीदेवी ओ श्रोत्रिय कुलालंकार विश्वेश्वमिश्रक पुत्र रहथि। हिनक न्यायशास्त्र ओ विरूदावली ग्रन्थक मिथिलामे विशेष प्रचार अछि। हरिअम्मय बलिराजपुर मूलक एकटा ब्राह्मण श्रोत्रिय महामहोपाध्याय सचलमिश्र भेलाह जे पूनामे समस्त पंडितपर विजय प्राप्त कऽ कऽ अनेक गाम ओ सत्कार बाजीराओ पेसवासँ प्राप्त कयलनि। **गोवर्द्धन सप्तशतीपर** उक्त पंडितजीक बनाओल एकटा टीका छनि, जकर आदिमे ई श्लोक अछि -

हरिअमयकुलजातः श्रोत्रियेषूत्तमेसु
सचलइतिजनायं भारतीया वदन्ति।
सरसिकजनचेतोहारिणीं भावहृद्यां
विवृति मिहभवानीनाथ नामाकरोति।।[51]

वस्तुतः संक्षेपहिमे चन्दाझा हरिअम्मय वंशक सारस्वत परामपराक प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत कयने छथि। मुगल बादशाह शाहजहाँ (1627-58) क समकालीन रघुदेवमिश्रक सम्बन्धमे ई जे किछु संकेतमे लिखलनि तकरा हिनक परवर्त्ती इतिहासकार परमेश्वरझा अपन ग्रन्थमे विस्तार देने छथि।[52]

खण्डवला नरेश माधवसिंह (1775-1808) क मुख्यन्यायाधीश सचलमिश्रक कीर्त्ति लेखनसँ ई जानल जा सकैछ जे चन्दाझा मैथिल पंडित लोकनि द्वारा मिथिलेतर क्षेत्रमे फहराओल जाइत विजय पताकाक सम्बन्धमे सेहो ज्ञान रखैत छलाह। हिनका द्वारा सचलमिश्रक पूना विजयवला देल गेल सूचनाक उपयोग डा. गंगानाथझा अपन पोथी कवि रहस्यमे कयने छथि।[53]

मिथिलाक प्रसिद्ध विसइवार वंशक सारस्वत अवदानक वर्णन पुरुष परीक्षाक विभिन्न कथाक प्रसंगमे टिप्पणी रूपमे भेल अछि। एहि वंशक पुरुष लोकनि कर्णाटसँ लऽ कऽ ओइनिवार राजवंश धरि राजत्व ओ वैदुष्य दूनू क्षेत्रमे अपन कीर्त्ति पताका फहरबैत रहलाह। विद्यापति सन जाज्वल्यमान नक्षत्रकँ उत्पन्न कयनिहार एहि वंशक वंशावलीकँ पंजीसँ अन्वेषण कऽ कऽ चन्दाझा ओकरा 'पुरुष परीक्षा'क परिशिष्टमे देने छथि। एहि वंशावलीमे विभिन्न महापुरुष लोकनिक नामक संग लागल कतोक विशेषणेसँ हुनका लोकनिक राजत्व ओ वैदुष्य दूनूक परिचय भेटि जाइत अछि।[54]

विसइवार वंशक बीजीपुरुष विष्णुठाकुरक पौत्र कर्म्मादित्य ठाकुर कर्णाट नरेश नरसिंहदेवक मन्त्री रहथि। हावीपट्टनक हैहट्ट देवी मूर्त्तिक सिंहासन ओ तिलकेश्वरमठक अभिलेखमे कर्म्मादित्यक नाम उत्कीर्ण होयबाक पुरातात्त्विक अभिलेखात्मक प्रमाण ताकि कऽ चन्दाझा प्रस्तुत कयने छथि।[55] कर्म्मादित्यक पुत्र सान्धिविग्रहिक देवादित्य ठाकुरक सेवा कर्णाट नरेश शक्रसिंहकँ प्राप्त भेल छलनि। चन्दाझाक अनुसार देवादित्यकँ दिल्ली सम्राटसँ मन्त्रिरत्नाकरक पदवी भेटल छलनि।[56] देवादित्यक पुत्र वीरेश्वर ठाकुरक सम्बन्धमे चन्दाझा लिखैत छथि जे-ई **पुरुषपरीक्षा** ग्रन्थकर्त्ता विद्यापतिक प्रपितामह, महावार्त्तिकनैबन्धिक धीरेश्वरक जेठ भाय ओ कर्णाट राजाक मन्त्री छलाह। हिनक बनाओल दशकर्मपद्धति नामक ग्रन्थ छनि। हिनक निवास वीरसाएर अथवा महथौरमे छलनि। वीरेश्वरक प्रसंगमे

एकटा किंवदन्तीक उल्लेख करैत चन्दाझा लिखैत छथि जे-हुनका लगमे एकटा स्पर्शमणि छलनि जाहि बलेँ ओ मिथिलामे यज्ञ, महादान, दीर्घिका-तड़ाग आदिक निर्माण करौलनि। दिल्ली सम्राट अलाउद्दीन (1296-1316) ओ हम्वीर चौहानक बीच रणस्तम्भ किला विजय लऽ कऽ जे संग्राम भेल छल ताहिमे मिथिलाक कर्णाट राजा सम्राटक संग रहथि। एहि युद्धक समस्त खर्च स्पर्शमणिक प्रभावसँ वीरेश्वर स्वयं वहन कयने रहथि। पछाति जखन सम्राटकेँ स्पर्शमणिक जानकारी भेटलैक तँ ओ वीरेश्वरकेँ तलब कयलकनि। वीरेश्वर कहा पठौलथिन जे काशीमे आउ तँ स्पर्शमणि दऽ देब। सम्राट आ वीरेश्वर दूनू गोटा काशीमे गंगाक मणिकर्णिका घाटपर पहुँचलाह। मुदा सम्राटक हाथमे उक्त स्पर्शमणि देबाक बदला वीरेश्वर ओकरा बीच गंगाक धारमे जुमा कऽ फेकि देलनि आ ओतहि अपन प्राणोत्सर्ग कयलनि।[57] वीरेश्वरक प्रसंग देल गेल एहि किंबदन्तीमे किछु अतिशयोक्ति प्रतीत होइछ तथापि भारतक मध्यकालीन इतिहासमे मिथिलाक भूमिकाकेँ रेखांकित करैत एहि ऐतिह्यक प्रामाणिकताक खोज कयल जयबाक चाही।

वीरेश्वरक पुत्र ओ विद्यापतिक पितामहभ्राता महामहत्तक सान्धिविग्रहिक चण्डेश्वरठाकुरक सम्बन्धमे चन्दाझा लिखैत छथि जे हिनक बनाओल **विवाद रत्नाकर** आदि सात गोट ग्रन्थ तथा **कृत्यचिन्तामणि** आदि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ प्रचारित छनि। शाके 1236 (1314ई.) मेलिखित **विवाद रत्नाकर** ओ **कृत्य चिन्तामणिमेसँ** एक-एक गोट श्लोक उद्धृत करैत पुनः हिनका सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे-ई सिमरामक तड़ागयज्ञमे अपन सर्वस्व दान कऽ कऽ संन्यास ग्रहण करैत हिमालय पहाड़मे चल गेलाह।[58]

चण्डेश्वरक भ्रातुष्पौत्र विद्यापतिक सम्बन्धमे चन्दाझा विस्तारसँ लिखने छथि। विद्यापति रचित 'पुरुष परीक्षा', 'लिखनावली', 'शैवसर्व्वस्वसार', 'कीर्त्तिलता', शिवसिंहराजरोहण प्रशस्ति पद 'आदि ग्रन्थक' परिचयओबानगी स्वरूप ओहि ग्रन्थसभक आदिक किछु श्लोककेँ **पुरुष परीक्षाक** परिशिष्टमे उद्धृत कयने छथि। विद्यापतिक अपन हाथसँ ल. सं.-299(1418ई.) मे रजाबनौलीमे प्रतिलिपि कयल भागवत पोथीक तालपत्रक विवरण दैत सूचना देने छथि जे-उक्त तालपत्र मौजे तरौनी प्रसिद्ध राघोपुर राजधानीक निकट श्रीलोकेश्वरझा पंडितक घरमे विद्यमान छनि।[59] चन्दाझाक ई अन्वेषण ओहि समयमे विद्यापतिक मैथिल परिचिति स्थापित करबामे बड्ड पैघ प्रमाण मानल गेल। एही कड़ीमे चन्दाझा विद्यापतिकेँ शिवसिंह द्वारा देल गेल बिस्फी दानपत्रक अन्वेषण कऽ कऽ ओकर मूलपाठ सेहो उद्धृत कयने छथि। एहि दानपत्रक विवरण दैत चन्दाझा अपन

समकालीन विद्यापतिक वंशज लोकनिक नाम उल्लेख संग एकटा महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक सूचना देने छथि, तदनुसार उक्त दानपत्रक आधारपर विद्यापतिक वंशज लोकनि बिस्फी गामक उपभोग करैत रहलथिन। सन् 1257 साल (1850ई.) मे कम्पनी सरकार एहि अकर ब्रह्मोत्तर कँ जब्द कऽ कऽ एहिपर मालगुजारी बान्हि देलक। सौराठक कोनो राम आ लक्ष्मणझा नामक दुइ भाय एहि ब्रह्मोत्तरक विरूद्ध सरकारकँ अरजी देलनि। सरकारकँ तुरत बहाना भेटि गेलैक। तखन विद्यापतिक वंशज भैयाठाकुर स्वयंकँ विद्यापतिक वंशज होयबाक प्रमाणस्वरूप उक्त ताम्रपत्र ओ वंशावली प्रस्तुत कयलनि। अदालतक पंडित विद्याकरमिश्र भैयाठाकुरक दिससँ अपन पक्ष रखलथिन। संस्कृतमे देल गेल ताम्रपत्रक अनुवाद कऽ कऽ सुनौलथिन। ताम्रपत्रमे शपथ कयल गेल छल जे जे केओ हिन्दू वा तुरूक विस्फी गामसँ 'कर' ओसूल करत तकरा गाय किंवा सूगर खयबाक पाप लगतैक। फिरंगी हाकिम एहिपर कहलक जे ओ ने हिन्दू अछि आ ने मुसलमान। ओकरा लय दूनूक मांसभक्ष्य छैक तँ ओकरा ई शपथ नहि लगतैक। तखन हाकिम एतेक अवश्य कयलक जे विस्फीकँ भैयाठाकुरक पुत्र दुलारठाकुरक नामे बन्दोवस्त कऽ देलक। चन्दाझाकँ उक्त ताम्रपत्र अपन ग्रामीण शिवलालचौधरीक घरमे भेटल छलनि जे भैयाठाकुरक भागिन छलाह।[60]

चन्दाझा द्वारा प्रदत्त उपर्युक्त सूचना ऐतिहासिक महत्त्वक अछि। प्रथमतः उपर्युक्त सूचना 1857 क संग्रामसँ पूर्व कम्पनी सरकारक विस्तारवादी नीतिक प्रमाण दैत अछि। जहिया 1850 ई. मे बिस्फी ब्रह्मोत्तर जब्द कयलगेल ओहि समयमे भारतक गवर्नर-जनरल लार्ड डलहौजी (1848-56) छल। भारतमे कम्पनी राजके भारतमे सुगठित करबाक हेतु ओ कोनोटा साधनक उपयोग करबाक नीति बनौने छल। अपनासँ पूर्वक कोनो भारतीय शक्तिक आदेश-निर्देश ओ ओकर अस्तित्त्वकँ जड़ि-मूलसँ समाप्त करबाक हेतु ओ डाक्ट्रीन आफ लैप्स (व्यपगत-सिद्धान्त) गढ़लक।[61] एहि सिद्धान्तक अन्तर्गत जँ बिस्फी जब्द कयल गेल हो तँ कोनो आश्चर्य नहि।

चन्दाझाक उपर्युक्त सूचनासँ एकटा औरो गीरह सोझराइत अछि। वर्त्तमानमे चन्द्रधारी म्यूजियम दरभंगाकँ जे दरभंगा कलक्ट्रियेटसँ विस्फी ताम्रपत्र भेटल छैक से सन्देहास्पद अछि। एकर लिपि देवनागरी छैक आ एकर पाठ सेहो चन्दाझा द्वारा देल गेल पाठसँ किछु भिन्न अछि। म्यूजियममे राखल ताम्रपत्रक ऊपरमे श्रीराम लिखल अछि। तत्पश्चात श्रीगौरीशंकराभ्यां नमः सँ पाठ आरम्भ होइत अछि। अन्तमे सन 807, संवत 1455 एवं शाके 1320 अंकित अछि।[62] चन्दाझा द्वारा

ताम्रपत्रक देल गेल पाठक प्रारम्भ 'स्वस्तिसँ भेल अछि आ एहिमे लक्ष्मण संवत 293 मात्र देलगेल अछि। ओइनिवार राजकालमे मिथिलामे देवनागरी केर प्रयोग सहजहिँ नहि अरघैत अछि। एहनामे ई कहबामे कोनो तारतम्य नहि जे म्यूजियमवला ताम्रपत्र असली नहि अछि। ई बात चन्दाझा द्वारा देलगेल विवरणहिसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि। चन्दाझा कहनहुँ छथि जे ताम्रपत्रक तर्जुमा (लिप्यान्तरण) कऽ कऽ हाकिमकँ देखाओल गेलैक, तँ देवनागरीमे ओकरा प्रतिलिपि कऽ कऽ विद्यापतिक काल बुझयबाक हेतु अप्रचलित लक्ष्मण संवतक स्थानपर ओकर समानान्तर अन्य प्रचलित संवतक वर्ष उत्कीर्ण करा देल गेलैक। यैह प्रतिलिपि कयल ताम्रपत्र संग्रहालयमे अछि। मूल ताम्रपत्र शिवलालचौधरीक जिम्मामे ओहि समयमे छलनि जे एखनो घरि अलक्षिते अछि। यद्यपि विद्यापतिक परिचय दैत चन्दाझा विषयान्तर भेलाह अछि, मुदा उपर्युक्त प्रसंगसँ एहि बातक पुष्टि अवश्य होइत अछि जे उक्त ताम्रपत्रक मोकदमाक ब्याजेँ कम्पनी सरकार विद्यापतिक मैथिल परिचितिकँ मान्यता देलक आ ओहिपर अपन स्वीकृतिक मोहर लगौलकतँ एकरा अप्रासंगिको नहि कहल जयबाक चाही।

चन्दाझा विद्यापतिक बादक विसइवार वंशक पुरुष लोकनिक सारस्वत अवदानक संकेतमे चर्च कयने छथि। विद्यापतिक मध्यमपुत्र हरपतिठाकुर कँ 'दैवज्ञबान्धव' नामक ग्रन्थक रचयिता कहल गेलनि अछि। विद्यापतिक छठम पीढ़ीमे भेल नारायणठाकुर **पुरुष परीक्षाक**प्रतिलिपि कयने रहथि जाहिपर हुनक हस्ताक्षरक संग ल.स. 504 (1613ई.) अंकित छल। चन्दाझा एही तालपत्रक आधारपर **पुरुषपरीक्षाक** अनुवाद कयने रहथि।[63]

ओइनिवार राजवंशक अधीन विकसित भेल पाण्डित्य परम्पराकँ संक्षेपमे विश्लेषित करैत चन्दाझा सूचना देने छथि जे राजा भवसिंहक समयमे अभिनव वर्द्धमान उपाध्याय भेल रहथि। नारी–भदौन निवासी वर्द्धमान अपन ग्रन्थ 'स्मृति तत्त्वामृत'मे अपन पितरक नाम भवेश ओ मायक नाम गौरी कहलनि अछि। पक्षधर ओ शंकरमिश्र सन नैयायिक भैरवसिंहक समय भेल रहथि। ई राजा विद्या–वैदुष्यक ततेक पैघ संरक्षक रहथि जे जरहटियामे खुनाओल गेल अपन पोखरिक यज्ञमे–चौदहसय मीमांसककँ आमन्त्रित कयने रहथि। ओहि यज्ञमे बंगालक रघुनाथ शिरोमणि सेहो उपस्थित भेल रहथि। खौआड़े वंशक मुरारि नाटकक टीकाकार रूचिपति तथा हुनक पुत्र आगम ग्रन्थक रचयिता हरिपति अन्तिम ओइनिवार नरेश लक्ष्मीनाथ कंसनारायणक समकालीन रहथि।[64] खण्डवला वंशक संस्थापक विद्वान महेशठाकुरक परिचय विभिन्न स्रोतसँ एकत्र कऽ कऽ चन्दाझा लिखैत छथि–ई महेशठक्कुर

महाशय महामहोपाध्याय कुजौली वंशावतंस महामहोपाध्याय शुचिकर पण्डितक छात्र छलाह, समाचार ई रागतरंगिणी ग्रन्थमे लोचन कवि ओ रूक्मिणी स्वयम्बर नाटकमे महामहोपाध्याय पल्ली वंशावतंस रमापति कवि ओ आनन्द विजय नाटकमे महामहोपाध्याय रामदास कवि कुजौली वंशावतंस लिखैत छथि। महामहोपाध्याय राजपंडित महेशठक्कुर चिन्तामणि आलोकपर दर्पण नामक एक न्यायग्रन्थमे टीका कयने छलाह जे अद्यावधि तर्क्क विद्या विशारद लोकनि मालतीमाला समान कण्ठ ओ हृदयमध्य रखैत छथि।''[65]

अपन प्रकाशित ग्रन्थसँ इतर विभिन्न पोथा सभमे चन्दाझा पंडित लोकनिक परिचय लिखने रहथि, जकर उपयोग परमेश्वरझा कयलनि। कतोक ठाम चन्दाझाक मतसँ ओ अपन असहमतियो देखौने छथि। गंगेश उपाध्यायकँ चन्दाझा शाण्डिल्य गोत्रीय सरिसवे छाजन मूलक कहलथिन अछि।[66] मुदा परमेश्वरझाक अनुसार गंगेश काश्यप गोत्रीय छलाह आ एहू गोत्रमे छाजन मूल होइत अछि।[67] चन्दाझाक अनुसार भंडारिसम निवासी ओ **पार्वती परिणय** नाटककर्त्ता ओ **कादम्बरीक** रचयिता एकेगोटे वाण कवि छलाह, मुदा परमेश्वरझा अपन पोथीमे चन्दाझाक एहि भ्रमकँ दूर कयलनि अछि। **पूजा प्रदीपक** रचयिता गोविन्दठाकुरक आश्रयदाता भवानन्दरायक सम्बन्धमे चन्दाझाक धारणा छलनि जे-ई सौरियाक सुरगणे वंशक राजा राजेन्द्ररायक पूर्वज रहथि। मुदा परमेश्वरझा एहि भवानन्दकँ जैसोरप्रदेशक भुर्सुट ग्राम निवासी कहैत छथि।[68] निष्कर्षतः देखल जाइछ जे चन्दाझा अत्यन्त परिश्रमपूर्वक मिथिलाक विद्वान लोकनिक परिचय-पात एकत्र कयलनि। एहि परिचयमे ओ विद्वानक मूल, गोत्र, माता-पिताक नाम निवास स्थान, आश्रयदाता, हुनका द्वारा रचित ग्रन्थक नाम ओ हुनकासँ सम्बद्ध कोनो किंवदन्ती विशेषकँ उद्धृत कयलनि। जँ कि ई अनुसन्धान विशुद्ध रूपसँ आरम्भिक कार्य छल तँ अनेक ठाम हुनकासँ भ्रम ओ त्रुटि होयब स्वाभाविक छल। तथापि हुनक एहि कार्यसँ लोक मिथिलाक एहि गौरवपूर्ण सारस्वत परम्परासँ अवगत भेल तथा अनुसन्धान ओ विमर्शक पक्षमे एकटा वातावरण तैयार भेल।

3. सन्त परम्पराक इतिहास- सत्रहम-अठारहम शताब्दीमे मिथिला मे मध्यदेशसँ आयल रामाश्रयी-कृष्णाश्रयी वैष्णव सन्त लोकनिक आगमनसँ एहि ठामक धार्मिक परम्परा गम्भीर रूपसँ प्रभावित भेल। पंच देवोपासना ओ गार्हस्थ्य जीवनमे दृढ़ आस्था रखनिहार मीमांसा ओ न्यायक भूमि मिथिलामे सेहो वैष्णवी संन्यास ओ वैराग्य परम्परा प्रवेश करऽ लागल, फलतः एतहु मठ ओ महंथीक परम्परा विकसित भेल। मैथिल ब्राह्मण द्वारा वैष्णव मतमे दीक्षित होयब एकटा नवीन

घटना छल। एहने एकटा वैष्णव संत साहेबरामदास भेल रहथि जे खण्डवला नरेश नरेन्द्रसिंह (1744-1761) क समकालीन रहथि। साहेबरामदास मिथिलामे वैष्णवधर्मक प्रचारक संग-संग महंथी परम्पराकेँ जन्म देलनि। ई साहेबरामदास एकटा निविष्ट भक्त कवि सेहो रहथि। चन्दाझा हिनक पदावलीक संकलन-सम्पादन ओ प्रकाशन करौलनि आ ताही क्रममे साहेबरामी सन्त परम्पराक इतिहास सेहो लिखलनि।

चन्दाझा द्वारा देल गेल विवरणक अनुसार पचाढ़ी स्थानक संस्थापक महात्मा साहेबरामदास शाण्डिल्य गोत्रीय, सरिसवे छाजन मूलक मैथिल ब्राह्मण छलाह। मौजे कुसुमौल, परगना जरैल, जिला दरभंगाक निवासी साहेबरामक कनिष्ठ भायक नाम कुनाराम ओ पुत्रक नाम प्रीतम छलनि। प्रीतमक आकस्मिक निधनसँ साहेबरामकेँ सांसारिकतासँ मोन उचटि गेलनि आ वैरागी भऽ गेलाह। एक दिन दण्ड प्रणाम करैत जगन्नाथपुरी विदाभेलाह। भगवानक दर्शनसँ जेना हुनका अलौकिक शक्ति प्राप्त भऽ गेलनि। अनेक तीर्थक भ्रमण करैत पुनः ओ मिथिला पहुँचलाह। एतऽ रामपुर-मुड़ियाक परिसरे? मूलक एकटा बालवैरागी-सिद्धयोगी केवटाक जंगलमे आश्रय बना कऽ रहैत छलाह। साहेबराम हुनके शिष्यत्व ग्रहण कयलनि। साहेबराम आधा दर्जन स्थान पर रहि कऽ साधना कयलनि आ ओतऽ मढ़ी बनौलनिजाहिमे पचाढ़ी स्थान सभ सऽ महत्वपूर्ण भेल। ऐहि स्थान कँ नरेन्द्र सिंह ओ हुनक पत्नी रानी पद्मावती धर्मार्थ बहुतो भूमि दानमे देलथिन।

साहेबरामक योगसिद्धि ओ चमत्कारक सम्बन्धमे चन्दाझा कहैत छथि जे एक बेर पटनाक नबाब साहेबरामकेँ कारावासमे धऽ देलकनि, मुदा अपन योगबलसँ प्रतिदिन ओ कारागारसँ निकलि गंगा तटपर जा सन्ध्या-वन्दन कयल करथि। नबाब एहि सन्तलीलाक सोझाँ नतमस्तक भऽगेल। साहेबरामक वृहत् शिष्यमंडली छलनि। ओहिमेसँ एकटा मुख्य शिष्य रामभद्रदासकेँ अपन उत्तराधिकारी बना साहेबराम समाधि ग्रहण कयलनि।

पचाढ़ी स्थानक ई द्वितीय महंथ रामभद्रदास नरवालय मूलक मैथिल ब्राह्मण छलाह। रामभद्रपुर-शोभनाथपट्टी (दरभंगा) निवासी रामभद्रदास धर्माचरण करैत अन्तकालमे अपन शिष्य भीषमदासकेँ उत्तराधिकारी बनौलनि।

पचाढ़ीक तेसर महंथ भीषमदास मौजे सिमराम, परगना हावीक निवासी छलाह। धर्मानुरागी ओ विद्वान भीषमदास पचाढ़ी स्थानक प्रताप कँ बेस विस्तारित कयलनि।

भीषमदास अपन जीवनहि कालमे अपन शिष्य बालमुकुन्ददासकेँ महंथी दऽ देलथिन। पाँचम महंथ बालमुकुन्द जलैवार मूलक मैथिल ब्राह्मण पोखरिभीड़ाक निवासी छलाह। अपन गुरूक परोक्ष भेलाक सोलह वर्ष बाद सन 1272 साल (1865ई.) मे बलदेवदासकेँ महंथी सौंपि स्वयं समाधिस्थ भऽ गेलाह।

छठम महंथ बलदेवदास जलैवार मूलक मैथिल ब्राह्मण छलाह। अपना समयमे ई पचाढ़ी स्थानकेँ विद्याक मन्दिरक रूपमे परिवर्त्तित कऽ देलनि। पंडित ओ विद्यार्थी लोकनिकेँ खर्च दऽ कऽ हुनका मठमे आश्रय देल गेलनि। रामनवमीक अवसरपर जनकपुरमे स्थान दिससँ साधु-सन्तकेँ ओ निर्धन आदिकेँ अन्न-वस्त्र दान देल जाइत छल। अठ्ठाइस वर्ष धरि महंथी कयलाक बाद (1893ई. मे) अपन जेठ भाय बरजाझाक पुत्र ओ अपन परम धर्मानुरागी भातिज वंशी दासकेँ महंथी प्रदान कऽ स्वयं समाधि लेलनि। सातम महंथ वंशीदास चन्दाझाक उत्तर समकालिक छलथिन। ई पचाढ़ी स्थानक प्रतिष्ठाकेँ औरो बेसी बढ़ौलनि। हिनकहि द्रव्य सहायतासँ चन्दाझा साहेबरामदासक पदावलीक प्रकाशन कयलनि।[69] एतावता चन्दाझा समग्रतामे तँ नहि, मुदा केवल पचाढ़ी इतिहास लिखि बड़ पैघ काज कयलनि। हिनक एहि इतिहाससँ मिथिलाक वैष्णव परम्परापर प्रकाश तँ पड़िते अछि संगहि पचाढ़ी स्थान, एहि स्थानक महंथ लोकनि ओ हुनका लोकनिक सामाजिक, शैक्षणिक ओ धार्मिक क्षेत्रमे कयल गेल कार्यक सम्यक् परिचय अध्येताकेँ भेटि जाइत छैक। जँ चन्दाझा एकरा लिपिबद्ध नहि कयने रहितथि तँ एहि स्थानक इतिहास गर्त्तमे दबल रहि जैतय।

4. मैथिली साहित्य परम्पराक इतिहास- चन्दाझाकेँ मैथिली भाषा-साहित्यक युग प्रवर्त्तक कहल जाइत छनि से एहि कारणे जे ओ केवल स्वयं साहित्य रचना कऽ कऽ अपन कर्त्तव्यक इतिश्री नहि कऽ लेलनि अपितु पूर्वज साहित्यकारक कृतिक अन्वेषण-मूल्यांकन कयलनि, अपन समकालीन साहित्यकार लोकनिक नेतृत्व कयलनि ओ अपन परवर्त्ती साहित्य लेखन ओ विमर्शकेँ नवीन दिशा दैत अनुसन्धानक मार्ग प्रशस्त कयलनि। वस्तुतः मैथिली साहित्यक इतिहासक अनुसन्धान ओकर संकलन-सम्पादन ओ प्रकाशनजन्य कार्यक श्रीगणेश सर्वप्रथम चन्दाझाहिक द्वारा भेल। मैथिली साहित्यक प्राचीन विभूति लोकनिक रचनाक संग-संग हुनका लोकनिक परिचय-पातक अन्वेषण कऽ कऽ 'सुकवि चरितामृत' नामसँ एकगोट व्यवस्थित ग्रन्थक रचना कयने रहथि। एकर जे अंश उपलब्ध छल ताहि आधार पर विश्वेश्वरमिश्र एकर सम्पादन कयलनि अछि। एहिमे चन्दाझाक महत्त्वपूर्ण टिप्पणीक संग तैस गोट अज्ञात कवि लोकनिक एकतीस गोट गीत

छनि। ई कवि लोकनि छथि क्रमशः अमृकर, उमापति, कविशेखर, कृष्णकवि, गोविन्द, घनश्यामदास, दामोदर, देवनाथ, धारेसर, भानुनाथ, मनबोध, रञ्जन, रत्नपाणि, रमापति, लक्ष्मीपति, श्रीधर, सदानन्द, सरसराम, सुकवि मित्र, सुवंशलाल, हर्षनाथ, ज्ञातदास एवं एकगोट अनाम कवि। चन्दाझाक ई अन्वेषण साहित्य इतिहासक दृष्टिसँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। एहि संग्रहक कतोक कविक परिचय आइयो अज्ञात अछि।[70]

मैथिली भाषाओ साहित्यक ख्यातिकेँ दिग्-दिगन्त धरि व्यापित कयनिहार महाकवि विद्यापतिक परिचितिकेँ लऽ कऽ ओहि समयमे विवाद ठाढ़ कयल जा रहल छल। बंगाली लोकनि विद्यापतिकेँ बंगाली सिद्ध कऽ रहल छलाह। तेहना समयमे चन्दाझा विद्यापतिक अनेक संस्कृत कृति, श्रीमद्भागवतक हस्तलेख, बिस्फी दानपत्र ओ पंजीसँ हुनक उतेढ़ ताकि ई साबित कऽ देलनि जे विद्यापति मैथिल छलाह, मुदाविद्यापतिक ख्याति हुनक मैथिली पदावलीकेँ लऽ कऽ छलनि। मिथिलामे तावत धरि विद्यापतिक पदक संकलन ओ प्रकाशनक कोनोटा कार्य नहि भऽ सकल छल। चन्दाझा एहि गम्भीर दायित्वकेँ अपना ऊपर लेलनि। ओ परिश्रम पूर्वक विभिन्न प्राचीन तालपत्र ओ लोककंठसँ विद्यापतिक पद जमा कऽ कऽ ओकरा अपन पोथामे उतारने चल गेलाह। **पुरुष परीक्षा** अनुवादक भूमिकामे देल गेल सूचनाक अनुसार चन्दाझा विद्यापति पदावलीक विशुद्ध मिथिला संस्करण प्रकाशित करयबाक हेतु संकल्पित छलाह।[71] चन्दाझा विद्यापति पदक आदि संकलनकर्त्ता शारदाचरणमित्रक संग घूमि कऽ पदक संकलनमे सहायता कयने छलथिन। विद्यापतिक तरौनी पदावलीक आविष्कारक चन्देझा छलाह। वैह शारदाचरणमित्रकेँ तरौनीक लोकेश्वरझाक घरमे राखल पदावली ओ विद्यापतिक हाथक लिखल **श्रीमद्भागवत** पोथी देखौने छलथिन। विद्यापति पदावलीक सम्पादक नगेन्द्रनाथगुप्तकेँ सेहो ई एहि कार्यमे प्रभूत सहायता कयने छलथिन, जे बात स्वयं गुप्त महोदय पदावलीक भूमिकामे मुक्त कण्ठसँ स्वीकार कयने छथि।[72] चन्दाझा मृत्युक बहुत बाद रामभद्रपुरसँ जे विद्यापतिक एक गोट औरो पदावलीक तालपत्र आविष्कृत भेल तकरो अन्वेषण चन्दाझाहिक द्वारा भेल छलनि जकरा ओ अपन संग्रहमे रखने रहथि। मुदा हुनक मृत्युक पश्चात् हुनक छोटभाय नेकलालझा अपन अग्रजक अरजल बहुतो पोथी-पतराक संग अपन सासुर रामभद्रपुर आबि बसलाह। हिनकहि पुत्र कविराज हरिश्चन्द्रझासँ लऽ कऽ रामभद्रपुर पदावलीक उद्धार कयल गेल।

चन्दाझाक अपन पोथामे विद्यापतिक कतेक रासँ पद सभ छलनि, तकर अनुमान हुनक परवर्त्ती बहुतो विद्वान लोकनिक कथन ओ क्रिया सभसँ लगाओल जा सकैछ। प्रो. रमानाथझा द्वारा देल गेल सूचनाक अनुसार हुनका बदरीनाथझासँ चन्दाझाक दू गोट पोथा भेटल छलनि ताहिमेसँ एकटामे चन्दाझाक अपन हाथसँ लीखल विद्यापतिक डेढ़ सय पद छल।[73] एहिसँ अतिरिक्तो रमानाथझा लग चन्दाझाक हाथसँ उतारल विद्यापतिक पदक पोथा छलनि से सूचना 'वैदेहीक 'चन्दाझा स्मृति अंक'क सम्पादक डा. रामदेवझा दैत लिखने छथि जे-सी.एम. कालेजक मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. श्री रमानाथझा लग चन्दाझाक कय गोट हस्तलेख छनि जाहिमे विद्यापतिक प्रामाणिक पाठयुक्त पाँच-छओ सय गीत संकलित अछि। ओहिमेसँ एकटा संकलनमे एकटा गीतक नीचाँ चन्दाझा लिखने छथि-सन 1312 साल, पौष शुदि, 14 शनि, ठाढ़ी ग्राममेँ लिखल।''[74] वैदेहीक एही अंकमे रूद्रकान्तमिश्रक एकगोट लेख 'विद्यापति पदावलीक टीकाकार चन्दाझा' प्रकाशित छनि। एहि लेखमे लेखक चन्दाझाक हस्तलिखित एकगोट प्रामाणिकविद्यापति पदावलीक सूचना देलनि अछि, तदनुसार एहिमे विद्यापतिक 164 गोट पद संकलित छल। एहिमेसँ 113 गोट पदक चन्दाझा हिन्दी व्याख्या कयने छलाह।[75] एहि सूचनासँ ईहो जानल जा सकैछ जे विद्यापतिकेँ अखिल भारतीय स्तरपर स्थापित करबाक हेतु, हुनक पदक भाव गाम्भीर्य ओ लालित्यक बोध अन्य भाषा-भाषीकेँ करयबाक हेतु चन्दाझा ओकर हिन्दी टीका कयने होयताह। डा. रामदेवझा अपन शोध-ग्रन्थ मैथिली शैव साहित्य में सूचना देने छथि जे राजपंडित बलदेव मिश्र लग हुनका चन्दाझाक एकटा पोथा देखबाक अवसर भेल छलनि जाहिमे अन्य कवि लोकनिक संग विद्यापतिक श्रृंगार ओ शिव विषयक प्रचुर गीत संगृहीत छल।[76] **श्रीमैथिलीक** दोसर अंकमे विद्यापतिक नओ गोट गीत प्रकाशित अछि तकर अन्तमे सूचना देल गेल अछि-चन्दाझाक संगृहीत हस्तेखसँ।[77] उक्त गीत चन्दाझाक कोन पोथासँ उद्धृत भेल आ ओ पोथा किनका लग छलनि तकर कोनो सूचना नहि देल गेल अछि। मुदा उपर्युक्त समस्त सूचनासँ ई जानल जा सकैछ जे चन्दाझा लग विद्यापति गीतक कतेक पैघ भंडार छलनि। हुनका द्वारा संकलित विद्यापति पदावलीक प्रकाशन ने तँ हुनक जीवन कालमे भेल आ ने हुनक मृत्युक बादे, मुदा हुनक संग्रहक उपयोग हुनक समकालीन ओ परवर्त्ती बहुतो विद्वान लोकनि कयलनि से धरि निर्विवाद। एमहर 2014 मे प्रो. रमानाथझाक लगवला कवीश्वरक पोथाक आधारपर डा. विश्वेश्वरमिश्र चन्दाझा द्वारा संकलित विद्यापतिक 209 गोट प्रामाणिक अप्रामाणिक पदक सम्पादन

'विद्यापति-गीतावली' नामसँ कयलन अछि। पदावलीसँ इतरहु प्राय: विद्यापतिक अधिकांश कृतिक संकलन चन्दाझा कयने रहथि। हिनकहि सहायतासँ गंगानाथझा इलाहाबादसँ **लिखनावलीक** प्रकाशन करौने रहथि। 8 फरवरी 1905 ई. कँ चन्दाझा विद्यापतिक **कीर्त्तिलताक** प्रतिलिपि कऽ कऽ कलकत्तामे डा. जी.ए. ग्रियर्सनकँ देने छलथिन जे इंडिया ऑफिस लाइब्रेरीमे सुरक्षित राखल अछि। एकर बीस वर्ष बाद 1925 मे डा. हरप्रसाद शास्त्री बंगला लिपिमे **कीर्त्तिलताक** प्रकाशन करौलनि। एतावता चन्दाझा आधुनिक कालमे ओ सर्वप्रथम व्यक्ति भेलाह जे विद्यापतिक उद्धार कऽ कऽ मैथिलीमे व्यवस्थित अनुसन्धानक परिपाटीकँ जन्म देलनि।

चन्दाझा द्वारा जे दोसर मैथिल कविक उद्धार भेल से थिकाह वैष्णव कवि गोविन्ददास। मैथिलीक प्राचीन पदावलीक संकलनक क्रममे चन्दाझा कँ गोविन्ददासक भणितासँ 335 गोट गीत प्राप्त भेलनि। चन्दाझा द्वारा संशोधित-संकलित ई पदावली दरभंगा राज पुस्तकालयमे सुरक्षित छल। एहि पदावलीक सर्वप्रथम प्रकाशन राज पुस्तकालयक तत्कालीन पुस्तकालयाध्यक्ष मथुराप्रसाद दीक्षित कयलनि।[78] पश्चात एही संग्रहक आधारपर साहित्य पत्रमे 1942 मे अमरनाथझाक नामसँ महाकवि गोविन्ददासझा 'श्रृंगार भजन गीतावली' प्रकाशित भेल।[79] चन्दाझा गोविन्ददासक परिचयक सेहो अन्वेषण कयने रहथि आ हुनका द्वारा रचित 'कृष्णलीला' नामक काव्य ग्रन्थ होयबाक सूचना देने छथि।[80]

खण्डवला वंशक संस्थापक महेशठाकुर मैथिलीक एकटा निविष्ट कवि सेहो छलाह, ताहि बातक प्रमाण सर्वप्रथम चन्दाझाहिक द्वारा प्रस्तुत कयल गेल। अपन मिथिलाभाषा रामायणक परिशिष्टमे चन्दाझा संक्षेपमे महेशठाकुरक परिचय दैत हुनक तीन गोट गीत उद्धृत कयलनि।[81] हाल-साल धरि अपन परिचय ओ कालकँ लऽ कऽ विवादमे रहल **पारिजातहरण** नाटकक रचयिता उमापतिक परिचयक अन्वेषण सर्वप्रथम चन्दाझाहिक द्वारा कयल गेल। 1893ई. मे चन्दाझा मिथिला पब्लिसिंग कम्पनी दरभंगा द्वारा विन्ध्यनाथझाक आयोजनमे पारिजात हरण नाटकक प्रकाशन करौलनि।[82]

चन्दाझा अपन 'सुकवि चरितामृत' मे टिप्पणी रूप मे उमापतिक निम्नलिखित परिचय देने छथि-ई महामहोपाध्याय उमापति उपाध्याय तिरहुति मौजे कोइलख मे बसथि। महामहोपाध्याय गोकुलनाथ उपाध्याय परीक्षक गुरू छलाह। हिन्दूपति हरिहरदेव मकमानीक प्रधानपण्डित ओ धनी छलाह। कीर्त्तनिञाँ नटुआ मिथिलामे ओही महाशयक द्वारा प्रचारित भेल। दरिहरय अमरावती मूलक मैथिल ब्राह्मण.

छलाह जनिक पिता कवि रत्नशर्मा चिन्तामणि न्याय ग्रन्थक क्षीर-नीर नामक टीका कयल छलजे श्री 5 मन्मिथिलेशक पुस्तकालयमे अछि।[83]

1917 ई. मे चेतनाथझाक सम्पादनमे पुनः **पारिजातहरण** प्रकाशित भेल। एकर सम्पादक चन्दाझाक द्वारा देल गेल सूचनाकेँ प्रामाणिक मानि पोथीक भूमिका लिखलनि। मुदा डा. जी.ए. ग्रियर्सन, डा. जयकान्तमिश्र, बाबू भोलालाल दास प्रभृत्ति विद्वान लोकनि चन्दाझाक सूचनाकेँ गम्भीरतासँ नहि लेलनि आ उमापतिक परिचयक सम्बन्धमे नाना प्रकारक अनुमान लगबैत रहलाह। एमहर आबि कऽ डा. रामदेवझा चन्दाझाहिक देल गेल सूचनाक दिशामे पर्याप्त अनुसन्धान कऽ कऽ ई प्रमाणित कऽ देलनि अछि जे उमापतिक आविर्भाव काल सत्रहम शताब्दी छलनि आ हुनक आश्रयदाता हिमालय तराइ स्थित मकमानपुरक सेनवंशी राजा हरिहरदेव हिन्दूपति छलथिन।[84]

नलचरितं नाटककर्त्ता गोविन्दक परिचय दैत चन्दाझा लिखैत छथि- ई **नलचरित** नाटककर्त्ता महामहोपाध्याय सोदरपुरीय कटका गोविन्दमिश्र कवि थिकाह। अद्यापि जनिक सन्तान मिथिलामे गंगौली मनीगाछीक उत्तरमे बसै छथि ओ अनेक गाममे छथि से पंजिका पोथीसँ स्पष्ट अछि।[85]

मुदा प्रो. रमानाथझाक कहब छनिजे **नलचरित**कर्त्ताके सोदरपुरीय मानब चन्दाझाक भ्रम थिकनि।[86] प्रो. झा डा जयकान्तमिश्रक मतक समर्थन कयलनि अछि जे गोविन्दक मूल दीर्घघोष सन्दहपुर छलनि।[87] तथापि एहि त्रुटिक कारणे चन्दाझाक कार्यक महत्ताकेँ छोट कऽ नहि आँकल जायत। हुनक ई प्रयास मैथिलीमे तर्क-वितर्क ओ विमर्शक परम्पराकेँ जन्मदेलक सैह हुनक सभसँ पैघ सफलता भेल।

लोचनकृत 'रागतरंगिणी'क अन्वेषण ओ ओकर प्रतिलिपि करबाक श्रेय चन्दहिझा कें छनि। शाके 1810, पौष कृष्ण पंचमी सोमकेँ ओ एहि ग्रन्थक प्रतिलिपि कयलनि। एकरहि आधारपर पश्चात पटना विश्वविद्यालयसँ एकर प्रकाशन भेल।[88]

चन्दाझाके साहित्यिक अनुसन्धानक जे एक गोट और महत्त्वपूर्ण कार्य थिकनि से अछि साहेबरामदासक पदावलीक सम्पादन। 1893 ई. मे चन्दाझाक विस्तृत भूमिकाक संग प्रकाशित **गीतावली** नामक एही पोथीमे साहेबरामक रागवद्ध 477 पदक संकलन कयल गेल अछि।[89]

उपर्युक्त साहित्यिक अनुसन्धानसँ इतर चन्दाझा अपन **मिथिलाभाषा रामायणक** परिशिष्टमे अनेक कवि ओ कीर्त्तनियाँ नाटककार लोकनिक रचनाक

संग नामोल्लेख कयने छथि जनिक पद ओ कृतिक अन्वेषण ओ स्वयं कयने छलाह। एहि सूचीसँ अतिरिक्तो हुनक पोथा सभमे अनेक अज्ञात कवि ओ हुनक पद सभ उल्लिखित भेटैत अछि। यथा हिनक एकटा पोथामे कोनो मकमानी राजाक आश्रित देवनाथ कविक गीत टीपल अछि।[70] गोनरझावला पोथामे कोनो रूद्रदत्त नामक कविक अनेक गीत संगृहीत अछि। उदाहरणक लेल देखल जा सकैछ हुनक एकटा गंगा विषयक पद

हे गंगे
अन धन मणिधन, धन गजराजे
सुत वनितादिक सकल समाजे
ई सभ ककरहु आएल न काजे
अन्त समय यमराज समाजे
ई सभ सुनिअ वेदगत पाँती
तदपि न थीर ज्ञान दिन राती
जप-तप संयम दान सुगाने
कयल न पल भरि चढ़िय गेयाने
तुअ तट आबि देखल तुअ धारे
तत्क्षण विनशित पाप पहाड़े
रूद्रदत्त भन श्री जगदम्बे
तुअ बिनु जग नहि केओ अवलम्बे।

वस्तुतः चन्दाझा विद्यापतिसँ लऽ कऽ अपना पूर्वक समकाल धरिक साहित्यकार लोकनिक योजनाबद्ध ढंगसँ परिचयक अन्वेषण ओ हुनक रचनाक यथासम्भव संकलन-सम्पादन ओ प्रकाशनक कार्य आरम्भ कयलनि। हिनक ई कार्य सुषुप्त मैथिली भाषा ओ साहित्यमे प्राणवायु फुकलक। हिनक अनुसन्धानसँ मैथिली साहित्यक इतिहासक एकटा ढाँचा तैयार भेल। हिनका देखादेखी अन्यो गोटामे अनुसन्धानक प्रवृति विकसित भेलनि। स्वभाषाक प्रति विद्वत्समाजमे गौरवबोध विकसत होअऽ लागल। एहि तरहेँ मैथिलीमे नवीन युगक सूत्रपात भऽ सकल। यद्यपि चन्दाझा द्वारा संकलित साहित्यिक निधिक बिरहो-बाँट भऽ गेल, तथापि जँ हुनक किछुओ सामग्रीक उपयोग बदरीनाथझा अपन 'मैथिली गीत रत्नावली' मे ओ रमानाथझा 'प्राचीन गीत संग्रह' मे कयलनि तँ एकरा चन्दाझाक कार्यक सफलते मानल जायबाक चाही।

5. ग्राम-मूलग्रामक इतिहास- मिथिलामे गामक नामकरण ओ पंजीक मूलग्रामक अवस्थिति एकटा रोचक किन्तु जटिल विषय रहल अछि। इतिहास-लेखनक ओ अनुसन्धान एकटा ईहो विषय भऽ सकैत अछि तकर अनुभव सर्वप्रथम चन्दहिझाकैं भेलनि। चन्दाझा मिथिलाक गाम ओ मूलग्रामक नामक व्युत्पत्ति ओ ओहिसँ सम्बद्ध किंवदन्तीक आश्रय लऽ कऽ 'मूलग्राम-विचार' नामक एकटा ग्रन्थक रचना कयने रहथि जे एखन धरि अलभ्ये अछि।[91] डा. गंगानाथझा प्रायः एही ग्रन्थकैं मिथिला तथा मैथिल ब्राह्मणक पुरावृत्त विषयक ग्रन्थ कहने छथि।[92]

यद्यपि चन्दाझाक 'मूलग्राम विचार' नामक ग्रन्थक सम्बन्धमे किछु कहल नहि जा सकैछ, मुदा हुनका द्वारा अनुसन्धित ग्राम-मूलग्रामक इतिहासक स्वरूपक परिचय **पुरुष परीक्षाक** अनुवादमे कयल टिप्पणी सभ ओ विभिन्न पोथा सभमे टीपल सूचनाक आधार पर प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

प्रो. रमानाथझा द्वारा देल गेल सूचनाक अनुसार हुनका लग राखल चन्दाझाक एकटा पोथामे बारह गोट गाम क्रमशः इजोत, इजरा-बसौली, इजरा-कन्दर्प, उमगाम, ऊरौली, उसथुआ, ऊरी, ॠगा, एहु, एकमा, बभनगामा, एकमीघाट-बागमती नदी, एकहर ओ ओइनीक विवरण छल।[93] ई विवरण कोन रूपक छल से तैं प्रो. झा नहि कहने छथि मुदा एकर अनुमान 'पुरुष परीक्षा'क टिप्पणी सभसँ लगैत अछि। यथा नान्यपुरक नामकरण भेल कर्णाट राजा नान्य देवक नामपर, मलनीडीह नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवक नामपर बसल, पंडौल लग स्थित वीरसायर गामक नाम हरसिंहदेवक महामत्तक वीरेश्वरठाकुर द्वारा खुनाओल गेल वीरसागर नामक सरोवरक कारणे पड़ल जे मैथिल ब्राह्मणक एकटा मूलग्राम सेहो थिक। चण्डेश्वरक महथा उपाधिक कारणे हुनक निवास भूमिक नाम पड़ल-महथौर। मगधक नन्द राजाक विरूद्ध चाणक्य जतऽ अभिचार प्रयोग कयलनि से गाम भेल नन्दारि जे आब नदारी कहबैत अछि। जबदी परगना स्थित सिरहिला गामक व्युत्पत्ति सिम्बलिवन भेल। चन्दाझा जलसैन गामकैं **महाभारतक** कर्णपर्वक विवरणक आधारपर ओहि समयक विदेह राजा जलसन्धक निवास स्थान मानैत छथि। **महाभारत** कालमे कृष्णक जेठ भाय बलभद्र मिथिलामे जाहि स्थानपर निवास कयने रहथि ताहि गामक नाम पड़ल बलायन तैं ओकर समीप बहडवाली नदीक नाम भेल बलायनी। अपन छोट भायकृष्ण सँ कुपित भऽ कऽ बलभद्र जाहि गढ़मे रहलाह ओ कोपगढ़ कहौलक। मिश्र लोकनिक निवास स्थल मिश्रावलीक विकृत रूप भेल मिसरौली। चन्द्रवंशी क्षत्रिय राजा मदनक नामपर गामक नाम भेल मदना। मदनक पौत्र बलिराजक नामपर हुनक गढ़क नाम भेल बलिराजपुर

जे मैथिल ब्राह्मणक एकटा मूलग्राम सेहो थिक। **पुरुष परीक्षाक** मूलदेवशशिदेव उपाख्यानमे टिप्पणी करैत चन्दाझा किंवदन्तीक आधारपर भरौड़ा परगनाक शशिपुर ओ भौर परगनाक शशियाडीहकेँ ओही शशिदेवसँ सम्बद्ध कयलनि अछि तँ मूलदेवक स्थान विशाला कहैत छथि जेकर विकृत रूप भेल बेसारा। ओइनिवार राजवंशक बीजी पुरुष ओएनठाकुरक उपार्जित गामक नाम भेल ओइनी। ओइनिवार नरेश देवसिंह अपन नामपर जे नवीन राजधानी बसौलनि से भेल देवकुली। शिवसिंह जे अपना नामपर अनेक गाम बसौलनि ओ भेल शिवसिंहपुर वा शिवैसिंहपुर। भाला परगनाक पद्मा गामक नामकरण पद्मसिंहक नामपर भेल। भगैड़ा परगनाक कंसनरैनी डीह अन्तिम ओइनिवार राजा कंसनारायणक बसौल राजधानी छल।[94] परमेश्वरझा अपन पोथीमे एकठाम चन्दाझाकेँ उद्धृत करैत लिखैत छथि जे हुनक तर्क छनि जे मगध नरेश नन्द मिथिलामे एकटा सुखवास स्थान बनौने रहथि जकर नाम नन्दपुर छल जे पछाति ननौर नामे प्रसिद्ध भेल।[95]

मिथिलामे 'भर' नामक गाम सभकेँ चन्दाझा भर क्षत्रियसँ जोड़ने छथि। हुनका अनुसार कलिगाममे भर लोकनिक केन्द्र छल। बौद्धक आक्रमणसँ कलिगाम छोड़ि ओ सभ पूव दिस पड़ायल एवं जाहितप्पा परगनामे पसरिगेल तकर नाम भेल भरौड़ा। मिथिलामे जाहि-जाहि गाममे ओकर निवास भेल तकर नाममे भर लागल यथा भराठी, भरौली, भरोड़ा, भौर, भौड़ा, भराम, भरथुआ, भरहो इत्यादि। मिथिलाक बाड़ प्रत्यान्तवला गाम सभकेँ चन्दाझा अग्निहोत्री लोकनिक निवास कहलनि अछि। एहि कोटिक किछु गाम अछि-कथबाड़, सिंहबाड़, बसुवाड़, मँगुवार इत्यादि।

मैथिल ब्राह्मणक एकटा प्रसिद्ध मूलग्राम दिघवयक अवस्थिति मिथिलाक पौराणिक सीमासँ बाहर मानैत चन्दाझा लिखने छथि-ई वंश दीर्घघोष, दीर्घोदय, दिघवै ब्राह्मण मैथिल छलाह। शाण्डिल्य गोत्र। पटना राजधानी छल, ताहि समयमे दीघबाड़ामे साग्निक ब्राह्मण छलाह जे, गंगातटक उत्तर शालग्रामीक पश्चिम प्रदेश ओ सरयूक पूर्व भागमे अछि, जे देश अद्यापि छपरा-सारनि विख्यात अछि। तात्पर्य छपरा नाम षट्परा, षट्कर्मकर्त्ता लोकनिक निवास भूमि। सारनि शब्दार्थ अरणि खदिरकाष्ठ-रचित अग्नि उत्पन्नार्थ वस्तु सऽ सहित देश। ताहि ठाम अम्बिका भगवती अधिष्ठात्री अद्यापि छथि ओ अत्युच्च दुर्गाकार दीर्घबाड़-अग्निहोत्र स्थान।''[96]

वस्तुतः चन्दाझा मिथिलाक ग्राम-मूलग्रामक इतिहासक अनुसन्धान अपना रीतिएँ कयने छथि। कोनो गामक नामकरणक पाछाँ ओकर प्राकृतिक-भौगोलिक

परिवेश, कोनो पौराणिक पात्र ओ ओहिसँ सम्बद्ध कोनो घटना, कोनो इतिहास पुरुषक सम्पृक्तताक सूत्रक अन्वेषणक संगहि चन्दाझा कोनो प्रचलित ऐतिह्य वा किंवदन्तीक आश्रय लैत गाम नामक व्युत्पत्ति सेहो अपना अनुसारेँ कयने छथि। यद्यपि वर्त्तमान कालक इतिहासमे सम्भावना ओ अनुमानक लेल कोनो स्थान नहि छैक। इतिहासकेँ सदिखन ठोस प्रमाण चाही। मुदा ई ध्यान रखबाक थिक जे चन्दाझा जाहि समयमे ई काज कयलनि ताहि समयमे महासमुद्रमेसँ ओ जैह किछु हथोड़ि कऽ निकालि सकलाह तकरा कम महत्त्वपूर्ण नहि मानल जा सकैछ। पुनः मिथिलाक न्यायशास्त्र, अनुसन्धाता लोकनिकेँ एतेक छूट तँ दैते छल जे जतऽ प्रत्यक्ष प्रमाण शिथिल वा अलक्षित रहय तऽ अनुमानक आश्रय लेब अनुचित नहि। चन्दाझा एही पद्धतिक अनुसरण कयलनि। वर्त्तमानहुँ कालमे इतिहास-लेखनक कतोक क्षेत्रमे ई पद्धति प्रासंगिक अछि।

6. गढ़-डीह-मन्दिर आदिक इतिहास- इतिहासरूपी शरीरमे जँ साहित्यिक स्रोतकेँ ओकर मज्जा कहल गेलैक अछि तँ पुरातात्विक स्रोतकेँ ओकर अस्थिपंजरक संज्ञा देल गेलैक अछि। साहित्यिक स्रोतमे किछु कल्पना, किछु असत्य वा अतिशयोक्ति सम्भाषणक सम्भावना रहैत अछि, मुदा पुरातात्विक स्रोतमे कोनो फँट-फाँटक कथमपि गुंजाइस नहि अछि। जँ कहल जाय तँ साहित्यिक स्रोतसँ प्राप्त सूचनाक सत्यताकेँ जँचबाक कसौटी थिक पुरातात्त्विक स्रोत। पुरातात्त्विक स्रोतक अन्वेषण आश्रयणक बिना लिखल गेल कोनो इतिहास अपूर्ण ओ एकांगीमानल जाइछ, ताहि तथ्यकेँ चन्दाझा जनैत छलाह। तैं अपन इतिहास-लेखनमे जतबे महत्त्व ओ साहित्यिक स्रोत आ किंवदन्तीकेँ देने छथि ततबे महत्त्व पुरातात्त्विक स्रोतकेँ सेहो। चन्दाझा मिथिला पुरातत्त्वक कतेक पैघ अनुसन्धाता छलाह तकर प्रमाण हुनका द्वारा लिखित ओ संगृहीत सामग्री सभ दैत अछि। हुनका साहित्यिक ओ मौखिक स्रोतसँ जे कोनो नगर, डीह, गढ़, खण्डहर, मन्दिर आदिक सूचना भेटलनि तकर स्थलक निरीक्षण ओ निर्धारणक संगहि ओतऽ छिड़िआयल पुरातात्त्विक अवशेष, मूर्त्ति अभिलेख आदिक उल्लेख 'पुरुष परीक्षा' पोथी ओ अपन पोथा सभमे कयने छथि।

पुरुष परीक्षामे चन्दाझा विभिन्न प्रसंगक क्रममे अनेक प्राचीन गढ़क उल्लेख कयने छथि। कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक एकटा गढ़ नान्यपुरमे छल। हुनक दोसर गढ़ सिमरौनगढ़ीमे छल जकर वास्तुशिलामे उत्कीर्ण अभिलेखकेँ चन्दाझा उद्धृत कयने छथि। ई अभिलेख अछि -

नन्देन्दुबिन्दु विधुसम्मितशाकवर्षे, तच्छ्रावणेसितदले मुनिसिद्धितिथ्याम्।
स्वाती शनैश्चरदिने करिवैरिलग्ने श्रीनान्यदेवनृपतिर्व्यदधीत वास्तुम।।

अन्धराठाढ़ीक कमलादित्य विष्णुस्थानक चर्च करैत ओहि ठामक एकटा शिलालेखक उल्लेख करैत चन्दाझा ओकर अर्थ कयने छथि जे एहि मन्दिरक निर्माण नान्यदेवक मंत्री श्रीधर कायस्थ कयने रहथि। एहि मन्दिरक एकटा पाथरक चौकठिमे हुनका 'मकरध्वज योगी (700)' लेख उत्कीर्ण भेटलनि। चन्दाझा पुरातात्त्विक सामग्रीसँ युक्त मलनीडीह, राघोपुर-नेहरा, उमागाम स्थित हरसिंहदेवक गढ़क अवशेष, बलिराजगढ़, धर्मागदगढ़ किंवा कोपगढ़, क्षेमगढ़ आदिक नामोल्लेखक संग-संग ओकर अवस्थिति ओ ओहिसँ सम्बद्ध जनश्रुति आदिक सूचना देने छथि। बलिराजगढ़क समीप स्थित मदनेश्वर महादेव स्थानक संस्थापक बलिराजक पितामह मदनकँ कहैत हुनका द्वारा स्थापित एकगोट औरो प्राचीन मन्दिरक सूचना देलनि अछि। ई मन्दिर मौजे साहो, परगना हावीमे छल। चन्दाझाक अनुसार 1281 साल अर्थात 1873 ई. मे जखन ओहिठाम एकटा पोखरि खुनाओल जाय लागल तँ ताहि क्रममे अनेक अपूर्व प्रतिमा सभ बहरायल। ओहि प्रतिमा सभकँ हावीडीह जे पूर्वमे हावीपट्टन छल ओतऽ आनि कऽ राखल गेल। एहीमेसँ एकटा लक्ष्मीनारयणक प्रतिमामे उत्कीर्ण अभिलेख-श्रीमन्मदनमाधवः छल। चन्दाझा एहि मदनक संगति बलिराजाक पितामहक संग बैसौने छथि।

हावीपट्टनहि स्थित हैहट्टदेवी भगवतीक सिंहासनमे उत्कीर्ण अभिलेखंकँ चन्दाझा पढ़लनि जकर अर्थ ई अछि जे कर्णाट नरेश रामसिंहदेवक पत्नी सौभाग्यदेवीक आज्ञासँ कर्म्मादित्यठाकुर, जे विद्यापतिक पूर्वज ओ कर्णाट राजाक मंत्री छलथिन से एकर स्थापना कयलनि -

अब्दे नेत्र शशांकपक्ष गदिते श्रीलक्ष्मणक्ष्मापेतर्मासि-
श्रावण संज्ञके मुनि तिथौ स्वात्यां गुरौ शोभने।
ह्वावीपट्टन संज्ञके सुविदिते हैहट्टदेवी शिवाकर्म्मादित्य-
सुमन्त्रिणेहविहिता सौभाग्यदेव्याज्ञया।।

यैह कर्म्मादित्यठाकुर तिलकेश्वर शिवमठक स्थापना कयने रहथि से सूचना उक्त मन्दिरमे उत्कीर्ण शिलालेखक आधारपर चन्दझा देने छथि।

चन्दाझा ओइनिवार राजवंशसँ सम्बद्ध विभिन्न ऐतिहासिक स्थलक उल्लेख कयने छथि। ओइनी एहि वंशक पहिल राजधानी छल। मुदा देवसिंह जे दोसर राजधानी देवकुली बनौलनि ओ दरभंगा कचहरीसँ कोस-सवा कोस दक्षिण सड़कसँ पूब आबाद अछि। शिवसिंह जे अपना नामपर शिवसिंहपुर बसौलनि से

गजरथपुर नामसँ सेहो जानल जाइछ। ई देकुलीसँ लगहि पश्चिम बागमतीक तटपर विद्यमान अछि। शिवसिंहक तिरोधान भेलाक बाद विद्यापतिक संग रानी लखिमा जाहि रजा-बनौलीमे बारह वर्षधरि प्रवास कयलनि तकरा चन्दाझा जनकपुरक निकट कहलनि अछि। एहिना कंसनरैनी डीह, पद्मा आदिक स्थापना ओ अवस्थितिक सूचना देलनि अछि। विद्यापतिक जन्मभूमि बिस्फी स्थित हुनक कुलदेवी विश्वेश्वरी, कंसी स्थित कुलयोगी स्थानक उल्लेख भेल अछि। ओइनिवार नरेशभैरवसिंहक बसाओल नवीन राजधानी बरूआड़क अवस्थिति बछौर परगनामे कहल गेल अछि।[97]

चन्दाझा द्वारा उल्लिखित समस्त स्थान आइयो अपन ऐतिहासिक ओ पुरातात्त्विक महत्ताकँ बचा कऽ रखने अछि। एतऽ प्रसंगतः एकटा बातक उल्लेख करब अप्रासंगिक नहि होयत जे चन्दाझा जाहि बरूआड़कँ भैरवसिंहक राजधानी कहलनि अछि ततऽ एकटा प्राचीन सूर्यक प्रतिमा अछि। भ्रमवश एकरा विष्णु मूर्त्ति मानि पूजा कयल जाइछ तेँ एहि गामक नामे विष्णु-बरूआड़ भऽ गेल अछि।[98] मुदा ई सूर्य प्रतिमा एहि दिस संकेतित करैत अछि जे अपन पूर्वज नरसिंह जकाँ भैरवसिंह सेहो प्रायः सूर्य मन्दिरक स्थापना कयने रहथि।

ओइनिवार नरेश भवसिंहक समकालीन हुनक धर्म्माधिकारी अभिनव वर्द्धमान उपाध्याय सेहो एकटा विष्णु मन्दिर बनबौने रहथि जे अतीत कालमे कहियो ध्वस्त भऽ कऽ विस्मृत भऽ गेल। मुदा ओहि मन्दिरक एकटा प्रस्तर खण्ड जे चन्दाझाक समयमे हाटी कोठीमे राखल छल, तकरा अपनेसँ देखि ओहिपर उत्कीर्ण अभिलेखकँ पढ़ि एहि निष्कर्षपर पहुँचलाह जे ई अवशेष वर्द्धमानक मन्दिर थिकनि। चन्दाझा उक्त अभिलेखक पाठ निम्न रूपक देने छथि -

जातो वंशेबिल्वपंचाभिधाने धर्म्माध्यक्षो वर्द्धमानो भवेशात्।
देवस्याग्रे देवयष्टिध्वजाग्रारूढ़ं कृत्वा स्थापयद्वैनतेयम्।।

ई वर्द्धमान राजधानी देवकुलीमे सेहो अपना नामपर वर्द्धमानेश्वर महादेवक स्थापना कयने रहथि जे सम्प्रतियो वर्त्तमान अछि।[99]

शिवसिंहक मन्त्री एवं सुप्रसिद्ध कवि अमृतकर कायस्थक डीहक सम्बन्धमे चन्दाझा 'सुकविचरितामृत' मे निम्न टिप्पणी कयने छथि - 'अमृतकर नामक मैथिल कायस्थ राजा शिवसिंहक मन्त्री छलाह जे चनौर अमरावती जिला दड़िभंगाक निवासी छलाह जनिक निवासस्थान अमीडीहसँ अद्यापि विख्यात अछि। उक्त डीह महादेपोषरिसँ निकटहिँ पश्चिम अछि।''[100]

वैष्णव संत बलिरामदासक समाधि-भूमि केवटा नामक ग्राममे होयबाक सूचना दैत चन्दाझा हुनक शिष्य संत कवि साहेबरामदास द्वारा निर्मित तीन गोट मढ़ी प्रथम एकमा-बसन्तपुरमे, द्वितीय-दिगौनमे आ तृतीय पचाढ़ीमे होयबाक उल्लेख कयने छथि। एहिमे पचाढ़ी स्थान प्रधानता पौलक जतऽ साहेबरामक समाधि विद्यमान अछि।[101]

वस्तुतः ई चन्दाझाक पुरातात्त्विक प्रेम ओ हुनक अन्वेषी दृष्टिक परिचायक अछि जे कोनो इतिहास पुरुष ओ ऐतिहासिक घटनासँ जुड़ल स्थानक खोज कऽ कऽ ओहिसँ जुड़ल सूचनादिकेँ लिपिबद्ध कऽ लेथि। अपन यात्रक क्रममे हुनका जँ कोनो पुरातात्त्विक स्थलक सूचना भेटनि तँ तकरा अपना आँखिएँ देखि ओकर विवरण अपन पोथामे लीखि लेल करथि। सौनवर्षा राज (सहरसा) मे अपन प्रवासक क्रममे चन्दाझा ओहि ठामक प्रसिद्ध चण्डीस्थानक दर्शन कयलनि जकर विवरण अपन बहीमे 28 जनवरी 1892 कँ लिखलनि- "सोनबरिसासँ श्रीमन्महाराजाझासँ सवारी भेटल। गाजीपन्ना आबी, श्रीचण्डीमाताक दर्शन करी, प्रस्तर एक चौकठि जे पुरान बड़क गाछ मठ बनैक समय काटल गेल छल ताहि तर उखड़ल जाहिखम्भामे लेख तिरहुता अक्षरमे-

श्रीमन्माहेश्वरीवरलब्ध-समस्त प्रक्रियाविराजमान्-युद्धश-
वंशकुमुदानन्दचन्द्र-राजश्रीमत् सर्वसिंहदेवारि विजयी।'

ल.सं. 200 कतेक छल।"[102]

चन्दाझा द्वारा चण्डीस्थान अभिलेखक पाठ टीपब कतेक महत्त्वपूर्ण अछि से स्वतः जानल जा सकैछ। उपर्युक्त अभिलेखमे जनिक नामक चर्च भेल अछि से मिथिलाक कोन राजवंशसँ सम्बद्ध छलाह, ई प्रश्नो एखनहुँ अनुत्तरिते अछि। चन्दाझाक पोथामे किछु पुरातात्त्विक-ऐतिहासिक महत्त्वक स्थान सभक जे नाम टीपलभेटैत अछि से एहिरूपक अछि-जयमंगलागढ़ी, नौलागढ़ी, मानी, गढ़ विसपी, गढ़ धुसौत, हावीडीह, साहो पट्टन, अमरावती, विशाली, विसारा, सीतामढ़ी, यज्ञवन, औराही, पोषरौनी, मङरौनी, कोइलख, सिरसी, उमगाम, जनकपुर, बलिया, अवाम इत्यादि।

निष्कर्षतः कहल जा सकैछ जे चन्दाझा जतेक पैघ अध्येता छलाह ततबे पैघ पुरान्वेषी सेहो। मिथिलाक गाम-गाममे विस्तृत पड़ल ऐतिहासिक ओ पुरातात्त्विक महत्त्वक स्थल सर्वेक्षण कऽ कऽ ओहि ठोस प्रमाणक आधारपर इतिहास लेखनक ओ पक्षधर छलाह। अपन एही उद्देश्यकँ पूरा करबाक हेतु जीवन पर्यन्त सर्वेक्षण करैत तत्सम्बन्धी विवरण जमा करैत रहलाह। मुदा खेदक गप्प जे

हुनका द्वारा संकलित ई अमूल्य निधि सम्पूर्ण रूपसँ प्रकाशमे नहि आबि सकल।

7. पोखरि-जलाशयक इतिहास- पोखरि आ जलाशय मिथिलाक सांस्कृतिक ओ आर्थिक जीवनक अभिन्न अंग रहल अछि। हाल-साल धरि कोनहुँ सामर्थ्यवान व्यक्ति द्वारा अपन नाम ओ कीत्तिकेँ अमर रखबाक हेतु अपन जीवनमे कमसँ कम एकोटा पोखरि खुनयबाक परिपाटी छल। विभिन्न नामसँ अभिहित मिथिलाक ई अजस्र पोखरि सभ आइयो अपना समयक इतिहास कहि रहल अछि। मिथिला-इतिहासमे पोखरिक की महत्ता अछि एकर अनुभव सर्वप्रथम चन्देझाकेँ भेलनि तँ अपन सर्वेक्षणक क्रममे ओ पोखरिपर सेहो अपन ध्यान विशेष रूपसँ केन्द्रित कयलनि।

मिथिलामे कर्णाट राजवंशक स्थापना संग जहिना क्रमबद्ध इतिहास भेटैत अछि तहिना एही संग पोखरियोक इतिहास भेटऽ लगैत अछि। कर्णाट वंशक राजा लोकनि सरोवरक निर्माणमे विशेष रूचि रखैत छलाह। चन्दाझा नान्यदेवक खुनाओल कोनो पोखरिक उल्लेख नहि कयने छथि, मुदा नान्यदेवक पुत्र मल्लदेव द्वारा मलनीडीहमे खुनाओल अनेक तड़ाग होयबाक सूचना देने छथि। दरभंगा नगरमे गंगदेवक खुनाओल पोखरिक नाम अछि गंगासागर तँ शक्रसिंह अपना नामपर शक्रीय दीर्घिका खुनौलनि जे आई सुखी-दीघी नामे जानल जाइछ। हरसिंहदेव द्वारा खुनाओल एकटा पोखरि निजाम्बु-दीर्घिका अछि जे आब दीघी-निमाज कहबैछ। हिनका द्वारा 1248 शाके (1326ई.) मे नेहरा-राघोपुरमे ओ उमगाममे एकटा अतिविशाल सरोवर खुनाओल गेल छल जे एखनहुँ विद्यमान अछि।

कर्णाट ओ ओइनिवार राजवंशक शासनकालमे विभिन्न राजकीय पदकेँ सुशोभित कयनिहार विसइवार वंशक पुरुष लोकनि द्वारा खुनाओल गेल कतिपय प्रसिद्ध सरोवरक सूचना चन्दाझा देने छथि। कर्णाट नरेश हरसिंहदेवक मंत्री वीरेश्वरठाकुर पंडौल लग अपना नामपर वीर सागर नामक एकटा पोखरि खुनौलनि जाहि कारणे ओहि गामेक नाम परि गेल बिरसायर। विद्यापतिक पितामह भ्राता चण्डेश्वरठाकुर सिमराम मे अतिविशाल पोखरि खुनौलनि। शिवसिंहक सखा विद्यापति अपन रजाबनौलीक प्रवासमे ओतऽ कयटा ने पोखरि खुनौलनि।

मिथिलाक ओइनिवार राजवंश तँ सरोवर निर्माणमे अपन अत्यधिक रूचिक कारणे इतिहासमे प्रसिद्ध अछि। शिवसिंहक खुनाओल रजोखड़ि सभ तँ एखनहुँ हुनक कीर्त्तिकेँ अमर रखने अछि। चन्दाझा शिवसिंहक कोनो विशेष पोखरिक उल्लेख तँ नहि कयने छथि, मुदा स्थूण रूपमे ई सूचना दैत छथि

जे-पन्द्रह वर्षक अवस्थामे राजगद्दीपर बैसऽ वला राजा शिवसिंह अपन शत्रु सभकेँ परास्त कयलनि आ ओकरासँ लूटल गेल खजानासँ पैघ-पैघ तड़ाग-दीर्घिका खुनौलनि ओ यज्ञ करौलनि। मिथिलामे जे कोनो विशाल पुरान तड़ाग अछि तकरा सम्बन्धमे पुछला पर लोक यैह कहैत अछि जे ई शिवसिंहक खुनाओल थिकनि।

शतावधि पुष्करनिर्माणकर्त्ताक रूपमे ख्यात ओइनिवार नरेश भैरवसिंह द्वारा तारसराय स्टेशनक निकट जरहटियामे खुनाओल गेल एकटा विशाल सरोवरक सम्बन्धमे चन्दाझा विस्तारसँ विवरण देने छथि। एहि राजाक दूटा सिपाही संग्रामसिंह ओ केसरीसिंह द्वारा पचही परगनाक संग्राम ओ ननौर गाममे खुनाओलगेल दू गोट पोखरिक सूचना दैत चन्दाझा पुनः लिखने छथि जे नारी-भदौन मे अभिनव वर्द्धमानक खुनाओल एकटा पोखरि अछि जकर रकबा तेरह बिगहा छैक।[103]

मिथिलाक सरोवर-यज्ञ केहन ऐतिहासिक ओ उत्सवमय होइत छल तकर किछु बानगी चन्दाझा अपन विवरणमे देने छथि। अन्तिम कर्णाट नरेश हरसिंहदेव नेहरा-राघोपुरक तड़ाग यज्ञमे देशक समस्त पंडित लोकनिकेँ आमन्त्रित कऽ हरिनाथाचार्यक संयोजनमे मैथिल ब्राह्मणक पंजी प्रबंध करौलनि।

चण्डेश्वरठाकुर अपन सिमराम तड़ागक यज्ञमे अपन सर्वस्व दान कऽ कऽ स्वयं हिमालय पहाड़ दिस चल गेलाह।

ओइनिवार नरेश भैरवसिंह जरहटिया तड़ागक यज्ञमे मिथिलाक चौदह सय मीमांसककेँ आमन्त्रित कयने छलथिन। देश-विदेशक राजा लोकनि एकर यज्ञक अवसरपर उपस्थित भेल रहथि। एहि यज्ञक प्रसंग प्रचलित एकटा ऐतिह्यक विवरण चन्दाझा देने छथि, तदनुसार एहि पोखरिक जे विशाल पाथरक जाठि अछि जे लंकाक तत्कालीन राजा अपना संगे अनने रहथिन। मुदा लंकाक राजाक शर्त्त रहनि जे यज्ञस्थलपर कोनो कनाह व्यक्ति नहि रहय। यज्ञक दिन उत्सव चलि रहल छल। यज्ञमंडपमे पक्षधरमिश्रक कनाह शिष्य बंगाली रधुनाथ शिरोमणि सेहो बैसल रहथि। किछु प्रसंग उठलापर शिरोमणि देखार भऽ गेलाह। हुनका देखि लंकेश जाठिकेँ पोखरिमे फेकि चल जाइत रहलाह।[104]

उपर्युक्त किंवदन्ती वा ऐतिह्य मिथिलामे सरोवर यज्ञक व्यापकताक प्रमाण तँ दैत अछि ओहूसँ बढ़ि कऽ कछि‌ु प्रश्न ठाढ़ करैत अछि जे की ओइनिवार राजा लोकनिक मैत्री सम्बन्ध लंका सन सुदूरवर्त्ती देशक संग सेहो छलनि? पाथरक जाठि लंका नरेश अपना संग कोना अनने होयताह? की ओहि समय धरि रामसेतुक अस्तित्व बाँचल छलैक जे आवागमनक साधनक रूपमे प्रयुक्त होइत छल?

निष्कर्षतः कहल जा सकैछ जे मिथिलाक सरोवरक इतिहासक सर्वेक्षणक किछु बानगी मात्रसँ चन्दाझाक इतिहास दृष्टिक आकलन कयल जा सकैत अछि। पोखरिक सम्बन्धमे हुनका द्वारा देल गेल विवरणसँ तत्कालीन मिथिलाक बहुतो अनभिज्ञात तथ्य परसँ परदा उठल अछि।

एहि प्रकारेँ देखल जाइछ जे चन्दाझा जीवन पर्यन्त अन्धकारमे लुप्त भेल मिथिलाक इतिहासकेँ तकबाक हेतु नाना प्रकारक सूचना ओ तथ्य सभ एकत्रित करैत रहलाह। विभिन्न प्रकरणपर फराक-फराक इतिहासलेखनक ओ एकटा योजना बनौने रहथि, किछु ओहिमेसँ पूरा भेल, किछु अपूर्ण रहल तँ किछु आरम्भो नहि कयल जा सकल। जीवन नाना प्रकारक विघ्न-बाधाक कारणे ओ अपन योजनाकेँ मूर्त्त रूप नहि दऽ सकलाह। अपन एहि अभियानमे एसकर पड़ल चन्दाझा इतिहास-लेखनक हेतु जतेक सामग्रीक संचयन कयलनि ओ स्वयंमे एकटा आश्चर्यक विषय थिक। मुदा समुचित प्रोत्साहन ओ प्रकाशनक अभावमे ओ सामग्री सभ विद्वत् समाजक समक्ष नहि आबि सकल। हुनक अनेकशः पोथामे टीपल इतिहास विषयक ई सामग्री सभ पड़ले रहि गेल। हुनक पोथाकेँ जे जतहि पौलनि से दबा रखलनि, ओकर दुरूपयोग-सदुपयोग होइत रहल। चन्दाझाक संचित निधिक किछुए अंश प्रकाशनक मुँह देखि सकल। हिनक यैह प्रकाशित अंश हिनक इतिहासक-लेखनक योजनाकेँ सूचित करैत अछि जाहिमे मिथिला-इतिहासक विभिन्न क्षेत्र पर दृष्टिपात कयल गेल अछि। एकरा हुनक व्यापक इतिहास-लेखन योजनाक पूर्व परिकल्पना (सिनाप्सिस)कहल जा सकैछ। यद्यपि चन्दाझाक प्रकाशित एहि संक्षिप्त इतिहासक विश्लेषण कयला उत्तर कतोक तथ्यगत त्रुटि ओ पूर्वाग्रह भेटैत अछि तथापि एकरा क्षम्य कयल जा सकैछ, से एहि कारणे जे चन्दाझाक ई कार्य मिथिला-इतिहास-लेखनक पूर्णतः आरम्भिक कार्य थिक तँ कतोकप्रकारक त्रुटि ओ भ्रम ठाढ़ होयब स्वाभाविक। दोसर ई ध्यान रखबाक थिक जे इतिहासक संकलन ओ लेखन हुनक व्यसन छलनि व्यवसाय नहि। ओ पेशेवर इतिहासकार नहि छलाह आ ने हुनका कोनो राजकीय किंबा अकादमिक सुविधे भेटल छलनि। ओ जे किछु कयलनि तकर पाछाँ हुनक कोनो अपन निजी स्वार्थ नहि छलनि। ओ तँ एहि ब्याजेँ सुषुप्त मैथिल समाजमे जागृति आनऽ चाहैत छलाह। ओ भारतक आन-आन क्षेत्रक लोककेँ मिथिलाक गौरवशाली इतिहास ओ समृद्धशाली परम्परासँ अवगत करबऽ चाहैत छलाह। अपन एही उद्देश्यकेँ ध्यानमे राखि ओ हिन्दीकेँ अपन इतिहास-लेखनक मुख्य भाषा बनौलनि आ अंशतः मैथिलीयोकेँ रखलनि।

जीवन संघर्षमे बाझल रहबाक कारणे प्रचुर सामग्रीक उपरान्तो चन्दाझा अपन इच्छाक अनुरूप मिथिलाक एकटा व्यवस्थित इतिहास नहि लीखि सकलाह ताहि बातक कचोट हुनका अपन जीवनक अन्तकाल धरि सीदित करैत रहलनि। हुनका अनुभव भेलनि जे इतिहास-लेखन सन दुरूह कार्य कोनो व्यक्ति विशेषसँ सम्भव नहि, ई सामूहिक प्रयासक वस्तु थिक। 1905 मे जखन जयपुरसँ मैथिलीक प्रथम मासिक पत्र मैथिलहित-साधनक प्रकाशन आरम्भ भेल आ ओहिमे मिथिलाक इतिहासकेँ स्थान नहि देल गेल तँ चन्दाझा एकटा पत्र लीखि पत्रिकाकेँ एहि दिशामे अग्रसर होयबाक लेल प्रेरित कयलथिन -

लिखल जाय मिथिला-इतिहास
नहि हो ताहिमे शिथिल प्रयास
विषय विशेष हमहुँ लिखि देब
सपनहुँ एक टका नहि लेब।[105]

चन्दाझाक एहि पत्रक भावार्थ यैह जे समकालीन विद्वान लोकनि मिथिला-इतिहास-लेखन दिस त्वरित अग्रसर होथु। एहिमे जँ इतिहासक कोनो पक्ष विशेषपर हुनका कहल जानि तँ ओ बिना पारिश्रमिक लेने एहि दायित्वक निर्वहन करताह। चन्दाझाक एहि आग्रहक आदर करैत मैथिल-हितसाधन जयपुरस्थ एकटा विद्वान अनिरूद्धठाकुरसँ मिथिलाक इतिहास लिखबा ओकर क्रमबद्ध प्रकाशन आरम्भ कयलक।[106]

मिथिला-इतिहासक प्रति चन्दाझाक अतिव्यग्रताक अनुमान एहू तथ्यसँ लगाओल जा सकैछ जे ओ एहि कार्य हेतु तत्कालीन विद्वान लोकनिकेँ उत्प्रेरित करैत हुनका सभकेँ एक मंचपर अनबाक उद्देश्यँ 1905 मे दरभंगामे 'मिथिला-तत्त्व-विमर्शिणी-सभा' वा 'मिथिला रिसर्च सोसायटी' नामक संस्थाक स्थापना कयलनि। अन्य उद्देश्यक अतिरिक्त एहि संस्था द्वारा - 'मिथिला देश, मैथिल विद्वान ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब तथा मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तु सभक अन्वेषण ओ यथासाध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा' करबाक उद्देश्य निहित कयल गेल। दरभंगा नरेश रमेश्वरसिंह ओ कलकत्ता हाइकोर्टक तत्कालीन जज शारदाचरणमित्र केँ एकर संरक्षक बनाओल गेलनि। संस्थाक सभापतिक दायित्व ग्रहण करबाक निवेदन दरभंगा कलक्टरसँ कयल गेलनि। केशीमिश्र बी.ए. एकर सेक्रेटरी भेलाह। बाबू तुलापतिसिंह, बाबू विन्ध्यनाथझा, डा. गंगानाथझा, बाबू विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंह, कालीबाबू डाक्टर, चित्रधर मिश्र, परमेश्वरझा एवं स्वयं चन्दाझा एकर सदस्य भेलाह।[107]

उपर्युक्त संस्था किंवा एहिसँ सम्बद्ध व्यक्ति लोकनि मिथिला-इतिहास लेल की-की कयलनि से तँ नहि जानल अछि, मुदा एकर एकटा सदस्य परमेश्वरझा चन्दाझाक संगृहीत सामग्रीक उपयोग करैत 'मिथिला-मिहिर' मे धारावाही क्रम सँ आरम्भ भेल। जँ कि परमेश्वर झा 'मिथिला-तत्त्व-विमर्शिणी-सभाक उद्देश्यसँ प्रभावित भऽ चन्दाझाक अन्तिम इच्छाकेँ पूरा करबाक हेतु इतिहास-लेखन कयलनि तँ अपन ग्रन्थहुक नाम 'मिथिला-तत्त्व-विमर्श' रखलनि। परमेश्वरझाक ई कार्य निस्सन्देह किछु अंशमे चन्दाझाक इच्छाक पूर्त्ति तँ कयलक, मुदा चन्दाझा जे मिथिला-इतिहास लेखनक वृहत् योजना बनौने रहथि तकर पूर्ति हुनक मृत्युक एक सय वर्षसँ बेसी बितलाक बादो नहि भऽ सकल अछि। एहि एक सय वर्षमे मिथिलाक स्वरूपे बदलि गेल अछि। हुनका द्वारा सर्वेक्षित पांडुलिपि, पुरातात्त्विक स्थल, सरोवर आदिमेसँ बहुतोक चिन्ह पर्यन्त मेटा गेलैक अछि। इतिहाससँ सम्बद्ध अनेकशः किवदन्ती सभ आब पूर्णतया विस्मृत भऽ गेल अछि। एहनामे भविष्यक अनुसन्धाता ओ इतिहासकार लोकनिक हेतु मिथिला-इतिहास-लेखनक आदिपुरुष चन्दाझा द्वारा संकलित सामग्री ओ सूचने अनमोल स्रोत सिद्ध होयत, भावी पीढ़ीक मार्गदर्शक बनत ताहिमे कोनो सन्देह नहि।

सन्दर्भ

1. सुमित सरकार, 'राजा राममोहनराय और अतीत से विच्छेद' **आधुनिक भारत**-बिपनचन्द्र, (स.), अंक-1, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1983, पृ. 106-123.
2. रामनाथझा, **प्रबन्ध संग्रह**, दरभंगा, 1963, पृ. 174-75.
3. बिहारीलाल फितरत, **आइना-ए-तिरहुत** (हिन्दी अनुवाद), महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउण्डेसन, दरभंगा, 2001, पृ. 80.
4. **वैदेही** (चन्दाझा स्मृति-अंक), दरभंगा 1964-65, पृ. - 117;Pandit Chandra (or chanda) Jha, Whom I know to be one of the most learned man in that part of India.
5. **मिथिला-मोद**, काशी, उद्‌गार - 25-26, अगहन-पूस, 1907(पृ. - 24 एवं 43-44.
6. **महेशवानी संग्रह**, अमरनाथ झा (स.), यूनियन प्रेस, प्रयाग, 1920; (भूमिका - डा. गंगानाथझा), पृष्ठ - 2.
7. रमानाथझा (**पूर्वोक्त**-2), पृ. - 180-81.

8. उपर्युक्त, पृ. - 181.
9. **चन्द्र रचनावली**, विश्वेश्वरमिश्र (स.), मैथिली अकादमी, पटना 1981, (भूमिका, पृ. - घ)
10. **चन्द्र पद्यावली**, बलेदेवमिश्र (स.), श्रीरमेश्वर यन्त्रालय, दरभंगा, संवत -1988, (भूमिका), पृ.-7.
11. **कवीश्वर स्मरणिका**, शंकरदेवझा (स.) पिण्डारूच, दरभंगा, 2008, पृ. 106 - 08.
12. शंकरदेवझा, **अमरजीक परिचय-संसार ओ पत्राचार**, नवरत्नगोष्ठी, दरभंगा, 2001, पृ. - 15-16.
13. हरिश्चन्द्रझा, **कविवर समीक्षा**, परमेश्वर पुस्तकालय, तरौनी, दरभंगा, पृ.-6-7.
14. **वैदेही** (चन्दाझा स्मृति-अंक), दरभंगा, 1964-65, पृ.-146-151.
15. **पुरुष परीक्षा**, अनुवादक-चन्दाझा, राज दरभंगा यन्त्रालय, शाके 1810, पृ.-19.
16. हरिश्चन्द्रझा (**पूर्वोक्त**-13), पृ.-5.
17. रमानाथझा (पूर्वोक्त-2), पृ.-184.
18. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-144-47.
19. **उपर्युक्त**, पृ.-123.
20. रमानाथझा (**पूर्वोक्त**-2), पृ.-195.
21. **उपर्युक्त**, पृ.-194.
22. परमेश्वरझा, **मिथिला तत्त्व विमर्श**, परमेश्वर पुस्तकालय, तरौनी, दरभंगा, 1949, पृ. (पूर्वार्द्ध) 95, उत्तरार्द्ध-18-19.
23. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-19.
24. बिहारीलाल फितरत (**पूर्वोक्त**-3), पृ.-13-14.
25. परमेश्वरझा (**पूर्वोक्त**-22), पृ.-97 (पूर्वार्द्ध).
26. श्यामनारायणसिंह, **हिस्ट्री आफ तिरहुत**, बैप्टिस्ट मिशनप्रेस, कलकत्ता, 1922, पृ.-3.
27. फ्रांसिस बुकनन, **एन एकाउन्ट ऑफ द डिस्ट्रिक्ट ऑफ पूर्णिया इन 1809-10**, बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी, पटना, 1928, पृ.-43.
28. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-54.
29. **उपर्युक्त**, पृ.-53.
30. **उपर्युक्त**, पृ-53.
31. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, **दिल्ली सल्तनत**, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 1983, पृ.-72-87.
32. **उपर्युक्त**, पृ.-70.

33. उपर्युक्त, पृ.-183.
34. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-53 एवं 258.
35. **उपर्युक्त**, पृ.-258.
36. **उपर्युक्त**, पृ.-258-59.
37. **कीर्त्तिलता**, विद्यापति, वासुदेवशरण अग्रवाल (व्याख्याकार), साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी, 1962, पृ.-38 एवं 309.
38. **कविपति विद्यापति मतिमान**, ताराकान्तझा (स.), विद्यापति स्मारक मंच, कोलकाता, 2000ई., पृ.-102-110.
39. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-259-63.
40. विद्यापतिठाकुर, **विभागसार**, गोविन्दझा (स.), मैथिली अकादमी, पटना 1976, पृ.-39.
41. **मैथिली**, अंक-2 मैथिली विभाग ल.ना.मि.वि., दरभंगा, 2007, रामदेवझा, 'विद्यापतिक समकालिक कवयित्री : महारानी धीरमती देइ', पृ.-24-31.
42. के.पी. जायसवाल, ''द कन्दाहा इन्सक्रिप्सन्स आफ किंग नरसिंहदेव आफ मिथिला'' **जे.बी.ओ.आर.एस.**; अंक-20, पटना, 1934, पृ.-14-15.
43. **कविचन्द्र विरचित मिथिलाभाषा रामायण**, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1998, पृ.-427.
44. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, **मुगलकालीन भारत**, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 1998, पृ.-138.
45. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, **मध्यकालीन भारतीय संस्कृति**, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 1990, पृ-115-16.
46. परमेश्वरझा (**पूर्वोक्त**-22) पृ.-13 (उत्तरार्द्ध).
47. रमानाथझा (**पूर्वोक्त**-2), पृ.-194-98.
48. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-67.
49. **उपर्युक्त**, पृ.-144.
50. गोनरझा, पिण्डारूच (दरभंगा) लग संरक्षित पोथासँ उद्धृत।
51. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-146.
52. परमेश्वरझां (**पूर्वोक्त**-22), पृ.-21-22 (उत्तरार्द्ध).
53. गंगानाथझा, **कवि रहस्य**, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1950, पृ.-69.
54. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-263-64.
55. **उपर्युक्त**, पृ.-54 एवं 263
56. **उपर्युक्त**, पृ.-54.
57. **उपर्युक्त**, पृ.-49 एवं 53-54.

58. उपर्युक्त, पृ.-49 एवं 53.
59. उपर्युक्त, पृ.-252, 256, 260-61.
60. उपर्युक्त, पृ.-255-56.
61. बी.एल. ग्रोवर एवं यशपाल, **आधुनिक भारत का इतिहास**, एस. चन्द एण्ड कम्पनी, प्रा. लि.नई दिल्ली, 1998, पृ.-208-10.
62. सत्यनारायणझा सत्यार्थी, **मिथिलाक्षर उदभव और विकास**, विस्मृत मिथिला प्रकाशन, दरभंगा, 2000, पृ.-26-27.
63. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-263-64.
64. **उपर्युक्त**, पृ.-259 एवं 262-63.
65. **कविचन्द्र विरचित मिथिलाभाषा रामायण** (पूर्वोक्त-43), पृ.-427-28
66. **गीतावली**, साहेबरामदास कवि चन्द्रशर्म्म (स.), इयूनियन यन्त्रालय, दरभंगा, शाके 1823, पृ.-ट (भूमिका).
67. परमेश्वर झा (**पूर्वोक्त**-22), पृ.-151 (पूर्वार्द्ध).
68. **उपर्युक्त**, पृ.-210 एवं 230 (पूर्वार्द्ध).
69. **गीतावली** (पूर्वोक्त-66), पृ-अ-ढ (भूमिका).
70. **विद्यापति गीतावली**, चन्दाझा (संक.), विश्वेश्वर मिश्र (सं.) साहित्यिकी, मधुबनी, 2014, पृ.101-115.
71. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-ख (भूमिका).
72. रमानाथझा (**पूर्वोक्त**-2), पृ.-187.
73. **उपर्युक्त**, पृ.-181.
74. **वैदेही** (पूर्वोक्त-14द्ध, पृ.-151.
75. **उपर्युक्त**, पृ-146-151.
76. रामदेवझा, **मैथिली शैव साहित्य**, मैथिली अकादमी, पटना, 1979, पृ-32-33.
77. **श्री मैथिली** (मासिक पत्र) वर्ष-1, अंक-2, मार्च 1925, पृ-29-32.
78. **गोविन्द गीतावली**, मथुराप्रसाद दीक्षित (स.), पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, 1932.
79. **श्रृंगार भजन गीतावली**-अमरनाथझा (संक.), मैथिली साहित्य पत्र, कार्यालय, दड़िभंगा, 1942.
80. **मिथिलाभाषा रामायण** (पूर्वोक्त-43), पृ.-429.
81. **उपर्युक्त**, पृ.-428.
82. रामदेवझा, **उमापति**, मैथिली अकादमी, पटना, 1980, पृ.-42.
83. **विद्यापति-गीतावली** (पूर्वोक्त-70), पृ.-127.
84. **उपर्युक्त**-, पृ.-12-19.

85. बालगोविन्दझा व्यथित, **मैथिली साहित्यक इतिहास**, मिथिलांचल प्रकाशन, दरभंगा, 1998, पृ.-173.
86. रमानाथझा (**पूर्वोक्त**-2), पृ.-197.
87. जयकान्तमिश्र, **मैथिली साहित्यक इतिहास**, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1988, पृ.-167.
88. रमानाथझा (**पूर्वोक्त**-2), पृ.-188.
89. द्रष्टव्य-**गीतावली** (पूर्वोक्त-66).
90. रामदेवझा (**पूर्वोक्त**-82), पृ.-35.
91. **चन्द्र पद्यावली**, राजपंडित बलदेवमिश्र (स.), श्रीरमेश्वर यन्त्रालय, दरभंगा, संवत् 1988, पृ.-7.
92. **महेशवानी संग्रह** (पूर्वोक्त-6), पृ.-2.
93. रमानाथझा (**पूर्वोक्त**-2), पृ.-184.
94. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-53, 123, 144-146, 218, 257, 259, 260, 263.
95. परमेश्वरझा (**पूर्वोक्त**-22), पृ.-75 (पूर्वार्द्ध).
96. रमानाथझा (**पूर्वोक्त**-2), पृ.-193-195.
97. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-19, 53, 67, 145, 146, 256, 258, 259, 263.
98. सत्यनारायणझा सत्यार्थी, **मिथिला की प्राचीन देवी-देवताएँ**, विस्मृत मिथिला प्रकाशन, 2001, पृ.-19 एवं 26.
99. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-259.
100. **विद्यापति-गीतावली** (पूर्वोक्त-70), पृ.-127.
101. **गीतावली** (पूर्वोक्त-66), पृ-ग-झ (भूमिका).
102. रमानाथझा (**पूर्वोक्त**-2), पृ.-182.
103. **पुरुष परीक्षा** (पूर्वोक्त-15), पृ.-49, 53, 54, 67, 259, 260, 262, 263.
104. **उपर्युक्त**, पृ.-49, 67, 262.
105. रमानाथझा (**पूर्वोक्त**-15), पृ.-200.
106. **मैथिल-हित-साधन**, जयपुर, साधन-2, प्रस्ताव-4, वैशाख, 1906, पृ.-3-6.
107. **उपर्युक्त**, साधन-2, प्रस्ताव-5-7, जेठ-आषाढ़-श्रावण, 1906, पृ.-4 एवं 6-7.

***